सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

दिसम्बर, 2016 वर्ष 15 अंक 10

नबी की है सुन्नत से दिल में महब्बत

ख़ुदा की महब्बत का बीमार हूँ मैं
नबी की महब्बत से सरशार हूँ मैं
मैं बेशक गुनाहों से अपने दबा हूँ
मगर ताइबे सूए–ग़फ़्फ़ार हूँ मैं
इताअ़त अ़लामत महब्बत की है यह
मुतीअ़ हूँ अगरचि ख़ताकार हूँ मैं
नबी की है सुन्नत से दिल में महब्बत
हर इक शिर्को बिदअ़त से बेज़ार हूँ मैं
सलाम और रहमत नबी पे हों लाखों
शफ़ीअ़ हैं वह मेरे गुनहगार हूँ मैं

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
जिक्रे नबीये पाक	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	13
हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	मौलाना मु0 अब्दुश्शकूर फारूकी रह0	16
मुआशरे का बिगाड़	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	20
अशलीलता का युग	इं0 जावेद इक़बाल	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
मुसलमानों का वास्तविक विधान	डॉ0 अल्लामा इक़बाल	29
इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	30
कर्तव्यनिष्ठा	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	34
घरेलू दवाएं	राशिदा नूरी	36
रूपवती क निक़ाब	फौजिया सिद्दीक़ा बीए0	37
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद– तो अल्लाह ने उनको दुन्या का बदला दिया और आख़िरत का बेहतर सवाब भी, और अल्लाह अच्छे काम करने वालों को पसन्द करता है(148) ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उलटे पांवों फेर देंगे, फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे[1](149) बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा समर्थक है और वह मदद करने वालों में सबसे बेहतर है(150) जल्द ही हम काफ़िरों के दिल में भय डाल देंगे इसलिए कि उन्होंने अल्लाह के साथ शिर्क किया जिस का अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह अन्याय करने वालों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है(151) और अल्लाह ने तुम से अपना वादा पूरा कर दिया जब तुम उनको अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि जब तुम (खुद ही) कमज़ोर पड़ गए और (पैग़म्बर) के हुक्म में झगड़ा करने लगे[2] और जब अल्लाह ने तुम को तुम्हारी पसंद की चीज़ दिखाई तो तुम ने बात नहीं मानी[3] तुम में कुछ दुन्या चाहते थे[4] और कुछ आख़िरत के इच्छुक थे फिर अल्लाह ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले[5] और वह तो तुम्हें माफ़ कर चुका और अल्लाह तो ईमान वालों पर बड़ी मेहरबानी करने वाला है[6](152) जब तुम ऊपर चढ़ते जा रहे थे और किसी को मुड़ कर देखते भी न थे और पैग़म्बर तुम्हें पीछे से आवाज़ दे रहे थे[7] तो उसने तुम्हें परेशान करने के बदले में परेशान किया ताकि तुम उस चीज़ पर दुखी न हो जो तुम्हारे हाथ से निकल गई और न उस पर जो तुम पर मुसीबत पड़ी और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस को खूब जानता है[8](153) फिर उसने ग़म के बाद तुम पर सुकून के लिए ऊँघ (नींद) उतारी वह तुम में से एक गिरोह पर हावी हो रही थी और एक गिरोह को मात्र अपनी जानों की चिन्ता थी वे अल्लाह के साथ जाहिलियत के गलत गुमान कर रहे थे, वे कहते थे कि हमें आप कह दीजिए कि सब कुछ अधिकार अल्लाह ही का है, वे अपने मन में वह छिपा रखते हैं जो आपके सामने प्रकट नहीं करते, कहते हैं कि हमारे बस में कुछ भी होता तो ह़म यहां न मारे जाते, आप कह दीजिए कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो मारा जाना जिनके लिए लिखा जा चुका था वे अपनी क़त्ल गाहों की ओर निकल ही पड़ते और अल्लाह को तो जो कुछ तुम्हारे मन में है उसकी परीक्षा लेनी थी और तुम्हारे दिलों को निखारना था

और अल्लाह दिलों की बात से खूब अवगत है[9](154) दोनों सेनाओं की मुठभेड़ के दिन तुम में जो लोग पीछे हटे उन को उनके कुछ कामों के कारण शैतान ने फिसलाया और बेशक अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा सहनशील है[10](155) ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने कुफ़्र किया और जब उनके भाई ज़मीन में यात्रा के लिए निकले या जिहाद में शामिल हुए तो उन्होंने उनसे कहा कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते कि अल्लाह उसको उनके दिलों की हसरत बना दे जब कि अल्लाह ही जिलाता और मारता है और अल्लाह तुम्हारी करतूतों को खूब देख रहा है[11](156) और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में मारे जाओगे या मर जाओ तो अल्लाह की मग़फिरत व रहमत उस से कहीं बेहतर है जिसे यह इकट्ठा कर रहे हैं(157)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. उहुद के युद्ध के बाद मुनाफिक़ों ने मुसलमानों को बहकाया कि फिर किसी जंग में मत आना वरना ऐसे ही मारे जाओगे, इसी की ओर इशारा है कि ऐसे लोगों की बात मानोगे तो नुकसान उठाओगे।

2. वादे के अनुसार शुरु में अल्लाह ने मुसलमानों को विजय दी और बहुत से काफिर मारे गये लेकिन पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात न मानी गई और एक पहाड़ी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो मुजाहिदीन तैनात किये थे और उनको आदेश दिया था कि वे किसी हाल में न हटें, वे विजय देख कर हटने लगे, उनके सरदार ने मना किया मगर कुछ लोगों ने न माना, तो मुश्रिकों को उधर ही से मौक़ा मिल गया और उन्होंने हमला कर दिया।

3. यानी जब विजय नज़र आने लगी और माल-ए-ग़नीमत पर निगाह पड़ी तो तुम पहाड़ से उतरने लगे और सरदार के मना करने के बावजूद तुम ने बात नहीं मानी।

4. पहाड़ी से हटने वाले कुछ लोगों ने यह भी सोचा कि विजय हो गई है अब माल-ए-ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) प्राप्त करने की बारी है।

5. यानी शुरु में तुम मुक़ाबला करते रहे और आगे बढ़ते रहे और तीरंदाज़ों को जिस पहाड़ी पर तैनात किया गया था वे भी अपनी जगह जमे रहे फिर अल्लाह का फैसला परीक्षा का हुआ और तीरंदाज़ विजय को देख कर पहाड़ से उतर गये और मुक़ाबले से फिर गये नतीजा यह हुआ कि पीछे से मुश्रिकों की सेना ने हमला कर दिया और जंग का पांसा पलट गया, सत्तर सहाबा शहीद हुए खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दाँत मुबारक शहीद हुए इससे बढ़ कर परीक्षा क्या होगी।

6. जो ग़लती हुई थी अल्लाह ने माफ़ कर दी, अब किसी के लिए उनको ताना देना ठीक नहीं।

शेष पृष्ठ .....19...पर..

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

किन अवसरों पर चुगली करना वैध है:-

जानना चाहिए कि चुगली किसी ऐसे मकसद से जो धार्मिक एतिबार से सही हो जब कि बिना चुगली के उद्देश्य तक पहुंचना ना मुम्किन हो तो वैध है लेकिन उसके 6 कारण है:—

1. बादशाह से या काज़ी से या इन दोनों के अलावा किसी जिम्मेदार या हाकिम से जो जुल्म रोकने और इंसाफ करने की कुदरत रखता हो, पीड़ित यह कह सकता है कि फुलां और फुलां ने मुझ पर इस प्रकार अत्याचार किया है।

2. किसी को बुराई से दूर रखने और गुनाह से बचाने और सीधे रास्ते पर लाने के लिए ऐसे आदमी से कहना जो बुराई से रोकने पर सामर्थ्य रखता हो, उस से यह कह सकता है कि फुलां यह यह काम करता है, आप इस को मना कीजिए लेकिन मकसद सिर्फ बुराई को दूर करना हो अगर यह मकसद नहीं तो चुगली अवैध है।

3. मुफ़्ती से कहना कि मेरे बाप या मेरे भाई या मेरे पति फुलां ने मुझ पर इस प्रकार अत्याचार किया है, अब मैं किस प्रकार मुक्ति हासिल करूं, किस प्रकार अपना हक़ लूं, या किस प्रकार अत्याचार को दूर करूं, चुगली वैध है लेकिन बेहतर और अफज़ल यह है कि नाम न ले, इस प्रकार कहे कि आप ऐसे आदमी के बारे में क्या कहते हैं जिसने इस प्रकार अत्याचार किया तो इस से उस का मकसद बिना उस आदमी का नाम लिए हासिल हो जायेगा और नाम लेना भी वैध है जिस का ज़िक्र हजरत हिंद की हदीस में आगे आयेगा।

4. मुसलमानों को किसी बुराई से बचाने और उस की भलाई करने के उद्देश्य से चुगली जाइज़ है, अर्थात कमज़ोर रावी के बारे में यह कह सकता है कि रावी कमज़ोर है गैर मोतबर है या गवाह के बारे में यह कह सकता है कि यह गवाह झूठा है, ऐसी चुगली के वैध होने बल्कि उचित होने पर तमाम मुसलमानों का इत्तिफाक़ है, अथवा किसी ने राय ली कि फुलां औरत या मर्द से शादी करने का इरादा है तो वह तुम्हारे ख्याल से कैसा है अथवा कैसी है। कारोबार में पार्टनर बनाने का ख्याल है या अमानत रखने का ख्याल है या कोई और व्यवहार करना है या किसी पड़ोसी के बारेमें राय ली कि वह कैसा है तो जिस से राय ली जाये उस पर अनिवार्य है कि तमाम बात बता दे कुछ छुपाये नहीं, जो जो बुराईयां हों वह जाहिर कर दे अर्थात पार्टनरशिप न करो वह माल खा जायेगा या अमानत न रखो वह बेईमान है बेईमानी करेगा या फुलां मर्द या फुलां औरत से शादी न करो, उस में ऐब है मगर सिर्फ भलाई की नीयत हो और इन्हीं कारणों

शेष पृष्ठ .....24...पर..

जिक्रे नबीये पाक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिहिलकरीम मुहम्मदिंव व अला आलिहि व असहाबिही अजमईन।

मक्का और काबाः- मक्का मुकर्रमा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश का शहर है वहां अल्लाह का घर काबा है लिहाज़ा मुनासिब यह है कि पहले मक्के का तआ़रुफ़ कराया जाए। हमारे मुल्क हिन्दुस्तान से पश्चिम कई हजार किलो मीटर दूर अरब देश है जो आज कल सऊदी अरब कहा जाता है वहां एक बहुत पुराना शहर मक्का है वहां एक बहुत पुरानी इबादत गाह काबा है। यह काबा सबसे पहले इन्सान और अल्लाह के सब से पहले नबी हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से लोगों की इबादत के लिए बनाया था। आदम अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद उस घर में और उस घर के गिर्द अल्लाह की इबादत करते थे।

अल्लाह जाने यह सिलसिला कब तक चला कि तूफाने नूह में यह ऐसा गायब हुआ कि नूह अलैहिस्सलाम की जो औलाद तूफ़ान से बच रही थी वह भी काबे से वाकिफ़ न थी। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना आया तो अल्लाह को मंजूर हुआ कि लोग उस इबादत वाले पहले घर से वाकिफ़ हों, जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को 86 साल की उम्र में औलाद से नवाज़ा गया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई तो अल्लाह का हुक्म हुआ कि वह अपनी चहीती बीवी हाजरा और लाडले बेटे को वहीं छोड़ आयें जहां आज काबा और उसके गिर्द मक्का शहर है, उस वक़्त वह शाम में थे। बड़ी सख़्त आज़माइश थी लेकिन अल्लाह के भक्त हज़रत इब्राहीम ने हुक्म की तामील की, यह किस्सा बड़ा अजीब और सबक़ आमोज़ है उसकी तफ़सील को छोड़ते हुए यह बयान करना है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस काबे क़ी जगह बता दी जिसे अल्लाह के हुक्म से दादा आदम अलैहिस्सलाम ने बनाया था। और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम की मदद से काबे की इमारत बना दी। फिर अल्लाह के हुक्म से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज़ लगाई कि लोगो अल्लाह का घर काबा तैयार हो गया है इस इल्लाह के घर का हज करो, अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आवाज़ अपनी कुदरत से सारे आलमों में पहुंचा दी और लोग आ आ कर वहां हज करने लगे, जब से अब तक वहां हज की इबादत का सिलसिला जारी है, यह अलग बात है कि लोगों ने हज की इबादत को बुरी रस्मों से खालिस नहीं रखा मगर हज तब से अब तक जारी है और अब वहां इस्लामी तरीके से हज़ किया जाता है, और वहीं अब अल्लाह के साथ साझी

ठहराने वालों यानी मुश्रिकों का जाना मना है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम की मदद से काबा बनाया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम ने शाम में अल्लाह की इबादत के लिए बैतुलमक्दिस बनाया था अगरचि अरब लोग हज के लिए काबा आते मगर दूसरे लोग इबादत के लिए किब्ला बैतुल मक्दिस को बनाते उस की तरफ़ मुंह करके इबादत करते, शुरु में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बैतुल मक्दिस की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे और मुसलमानों को भी यही हुक्म था लेकिन बाद में अल्लाह तआला ने अपने नबी और मुसलमानों को काबे की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दे दिया और अब हम मुसलमानों का किब्ला यही काबा है। हम जहां भी रहें काबे की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं, यहां यह बात खूब याद रहे कि मुसलमान काबे की तरफ मुंह करके अल्लाह की इबादत करते हैं काबे की इबादत नहीं करते रब्बे काबा की इबादत करते हैं, रब्बे काबा की नमाज़ पढ़ते हैं जो काबे की इबादत करेगा काबे से दुआ मांगेगा, हजरे अस्वद से दुआ मांगे गा वह मुश्रिक हो जायेगा, अल्लाह महफूज़ रखे।

काबे के गिर्द जो आबादी बसी है वही आबादी मक्का कहलाई मक्के में हज़रत इस्माईल का खानदान रहता चला आ रहा था। दूसरे लोग भी आ बसे। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के खानदान वालों की बड़ी इज़्ज़त थी काबे की देख भाल इसी खानदान के लोग करते चले आ रहे थे, खानदान के किसी बुजुर्ग की निस्बत से यह लोग आगे चल कर कुरैशी कहलाए, इसी कुरैश खानदान में एक बुजुर्ग हाशिम गुजरे हैं उनके बेटे का नाम अब्दुल मुत्तलिब था वह अपनी कौम के सरदार थे और काबे के मुतवल्ली थे, इन्हीं के ज़माने में अबरहा ने हाथियों की फौज के साथ काबे को गिराने की गरज़ से निकला मगर उस पर अल्लाह का अज़ाब आया और वह तबाह हो गया अल्लाह ने काबे को महफूज़ रखा जिसका ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरतुल फ़ील में मौजूद है।

अब्दुल मुत्तलिब के बारह बेटे थे उन में एक का नाम अब्दुल्लाह था उनकी शादी हज़रत आमिना से हुई थी इन्हीं दोनों बुजुर्गों को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माँ बाप होने का शरफ़ हासिल हुआ।

प्यारे नबी की पैदाइशः-

अल्लाह के प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 8 रबीउल अव्वल दोशंबा के दिन सुब्ह के वक्त शिकमे मादर से इस दुन्या में जल्वा अफरोज़ हुए, अल्लाह की रहमत हो आप पर, लाखों दुरूद व लाखों सलाम हों आप पर।

उसी साल अस्हाबे फील का वाकिआ हुआ था इसलिए उस साल को आमुल फ़ील कहा जाता है, तारीखे पैदाइश आप की बाज़ उलमा ने 8 रबीउल अव्वल बाज़ ने 9 रबीउल अव्वल तो बाज़ ने 12 रबीउल अव्वल लिखी जियादा मशहूर 12 है लेकिन ज़ियादा सही 8 लगती है जो भी हो

सब तरीखें मुबारक हैं। दिन दोशंबे पर सब का इत्तिफ़ाक़ है। बाज़ हिसाब लगाने वाले आलिमों ने हिसाब लगा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीख़े पैदाइश ईस्वी हिसाब से 22 अप्रैल 571 ई0 लिखी है वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपनी मां के पेट ही में थे कि आप के वालिद मुहतरम हज़रत अब्दुल्लाह ख़जूरें ख़रीदने मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये थे वहीं उनका इन्तिक़ाल हो गया था इस तरह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यतीम पैदा हुए, आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब को आप की पैदाइश पर बड़ी ख़ुशी हुई, सियर वाले लिखते हैं कि दादा अब्दुल मुत्तलिब पोते को ले कर काबे के अन्दर गये और दुआएं कीं और मुहम्मद नाम रखा।

मक्के के कुरैश तिजारत पेशा थे, और अब्दुल मुत्तलिब तो क़ौम के सरदार थे, मक्के के इन शरीफ लोगों में यह रवाज़ था कि औरतें अपने नौज़ाइदा बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं। करीब के देहात की कबाइली औरतें जिनकी गोद में बच्चा होता मक्के आतीं और वहां से नौ जाईदा बच्चे दूध पिलाने के लिए ले जातीं, और बच्चे के बाप से माकूल उज़रत पातीं और इनआम व इकराम भी, चुनांचि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के वक्त भी देहात से औरतें बच्चे लेने आईं और मक्के के शुरफ़ा के घरों से नये पैदा होने वाले बच्चे ले गईं, औरतें हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी लेने आईं मगर यह देख कर कि बाप नहीं है यहां क्या मिलेगा छोड़ कर चली गईं उन्हीं औरतों में क़बीला बनी सअ़द की दाई हलीमा भी थीं दाई हलीमा ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा तो बहुत पसन्द किया और आप को ले गईं वापसी के रास्ते ही से ख़ैर व बरकत जाहिर होने लगी। दाई हलीमा की सवारी सब सवारियों से तेज़ चल रही थी, दाई हलीमा के घर बरकतों का नुजूल होने लगा, उनकी ऊँटनी और बकरियों का दूध बढ़ गया, खुद दाई हलीमा की छातियों में दूध बढ़ गया, दाई हलीमा ने खुली हुई बरकतें देखीं उन को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बड़ी महब्बत हो गई थी यहां तक कि दो साल दूध पिलाने के बाद जब आपको बीवी आमिना को वापस करने गईं तो दरख्वास्त की कि बच्चे को कुछ दिनों के लिए और दे दीजिये। चुनांचि बीवी आमिना ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ दिनों के लिए दाई हलीमा को दे दिया, मगर वहां कुछ महीनों बाद फरिश्तों के ज़रिये प्यारे नबी का सीना चाक करने का वाक़िया पेश आया जिसे शक्के सद्र का वाकिआ कहा जाता है, इस वाक़िये की ख़बर से दाई हलीमा घबरा गईं और आप को बीवी आमिना के पास पहुंचा दिया। और आप अपने दादा की निगरानी में अपनी मां बीवी आमिना के पास रहने लगे। अल्लाह की मसलहत जब आप 6 साल के हुए तो माँ का इन्तिक़ाल हो गया, दादा बड़े लाड व प्यार से पालते रहे लेकिन जब आप 10 साल के हुए तो दादा का भी इन्तिक़ाल हो

गया और अब अपने चचा अबू तालिब की निगरानी और जिम्मेदारी में आ गये।

आप बड़े हुए तो आपने कुछ दिनों उजरत पर लोगों की बकरियां भी चराई हैं आप ने तिजारत भी की है। मक्के में एक रईस औरत हज़रत ख़दीजा थीं सूरत व शक्ल में बहुत अच्छी थीं, वह बड़ी मालदार थीं वह बेवा थीं, वह अपना माल लोगों को देकर साझे की तिजारत करती थीं, हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दयानतदारी मशहूर थी लोग आपको सादिक़ और अमीन के नाम से पुकारते थे, हज़रत खदीजा ने आप को माल दे कर साझे की तिजारत के लिए बाहर भेजा और बड़ा नफ़ा कमाया साथी ही बड़े ख़ैर व बरकत का मुशाहदा किया वह आपसे बहुत मुतअस्सिर हुईं यहां तक कि आपको निकाह का पैग़ाम दे दिया, उस वक्त हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र 25 साल और हज़रत ख़दीजा की उम्र 40 साल थी, हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत खदीजा से निकाह कर लिया अल्लाह ने बड़ी बरकत दी, हज़रत खदीजा से आपकी 7 औलादें हुईं चार बेटियां, हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुकय्या, हज़रत उम्मे कुल्सूम और हज़रत फ़ातिमा। हज़रत कासिम, हज़रत ताहिर और हज़रत तय्यब इन सबसे अल्लाह राजी हुआ, हज़रत फ़ातिमा सबसे छोटी बेटी हैं, बेटे तीनों बचपन ही में वफ़ात पा गये थे चारों बेटियां बड़ी हुईं चारों की शादी हुई, मगर हज़रत फ़ातिमा के सिवा किसी की नस्ल न चली।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब चालीस साल के हुए तो अल्लाह तआला ने आप पर कुर्आन नाज़िल करना शुरु किया और नुबूव्वत के कामों का हुक्म दिया, जब आप ने कौम को बताया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं अल्लाह का रसूल हूं तो क़ौम आप के ख़िलाफ़ हो गई, हज़रत खदीजा ने अपको नबी मान लिया इसी तरह मर्दों में हज़रत अबू बक्र, और लड़कों में हज़रत अली और गुलामों में हज़रत ज़ैद ईमान ले आए इन सब से अल्लाह राजी हुआ। कौम ने आपको बहुत सताया मगर किस्मत वाले ईमान भी लाते रहे, क़ौम ईमान लाने वालों को भी सताती और आपको भी। यहां मुकाबले की ताक़त न थी, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशवरे से कुछ लोग हिजरत करके हब्शा चले गये थे, कुछ दिनों बाद हब्शा के लोग वापस आए, मक्के वालों का जुल्म बराबर जारी रहा उधर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुर्आन उतरने का सिलसिला जारी रहा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत मिलती रही। जब कुरैश का जुल्म हद से ज़ियादा गुज़रा यहां तक कि एक रात लोगों ने बुरे इरादे से हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घर घेर लिया तो अल्लाह के हुक्म से आप ने मदीना हिजरत फरमाई, लोग घर घेरे रहे मगर आप घर से निकले आप को कोई देख न सका। आप हज़रत अबू बक्र के पास आए और उनको साथ ले कर रात ही में मदीने को रवाना हुए

मदीने का यह अजीब व ग़रीब सफ़र अपने बयान के लिए कई घण्टे चाहता है। तफ़्सील को छोड़ते हुए हम बयान करते हैं कि आप मदीना पहुंचे वहां आप का बड़ा इस्तिक़बाल हुआ मदीना के बहुत से लोग पहले ही ईमान ला चुके थे और बहुत से मुसलमान मक्के से हिजरत करके मदीने जा चुके थे, उसकी तफ्सील भी छोड़ते हैं। आपने मदीना में मस्जिद बनाई और वहां रहने लगे आपके सहाबा (साथी) भी आपके पीछे मक्के से मदीना पहुंच गये और मदीने में मुसलमानों की ताक़त हो गई बल्कि यूं कहिये कि इस्लामी हुकूमत क़ाइम हो गई जिसके सरबराह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, उन पर कुर्आन का नुज़ूल जारी था। जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना हिज़रत की तो आपकी उम्र 53 साल की थी, आपकी चहेती अहलिया ख़दीजा और आपके चचा अबू तालिब का मक्के ही में हिजरत से पहले ही इन्तिक़ाल हो चुका था।

मदीना चले जाने पर भी मक्के वालों ने मुसलमानों को सताना न छोड़ा और कई हमले किये। बद्र की लड़ाई हुई, उहुद की लड़ाई हुई, ख़न्दक़ की लड़ाई हुई सब में अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। इस तरह एक दिन वह भी आया कि हिजरत के आठवें साल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार सहाबा के साथ मक्का मुकर्रमा में फ़ातिहाना दाखिल हुए। मक्के के लोग जो आज हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने सर निगूं थे यह वही लोग थे जिन्होंने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताने में हद कर दी थी यहां तक कि बुरे इरादे से आप का घर घेर लिया था और आपको अपना शहर छोड़ने पर मज़बूर कर दिया था फिर जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना चले गये तो वहां भी चैन से न रहने दिया और तीन बार ताकतवर हम्ले किये लेकिन आज हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के वालों को मुआफ़ कर दिया, हबशी को भी मुआफ़ कर दिया जिसने प्यारे नबी के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा को उहुद की लड़ाई में शहीद किया था और हिन्दा को भी मुआफ़ कर दिया जिन्होंने हमारे प्यारे नबी के चचा को शहीद करवाया था। उसका नतीजा यह हुआ कि मक्के के तमाम लोग मुनाफ़िक़ाना नहीं मुख़लिसाना इस्लाम में दाखिल हो गये। सुब्हानल्लाह।

मक्के में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए थे यहीं आपको नुबूवत मिली थी और यहीं कुर्आन का बड़ा हिस्सा उतरा था, यहीं आप की उम्र के 53 साल गुज़रे थे यहां से आपको बड़ी महब्बत थी और अब यहां अपने घर में रहने में कोई रुकावट न थी, मगर जब आपने मदीना हिजरत फ़रमाई थी तो मदीना वालों ने आप से अहद लिया था कि आप मदीना वालों को छोड़ कर न जाएंगे आपने वादा पूरा किया और सहाबा के साथ मदीना लौट गये और मदीने ही को अपना वतन बना लिया, अब इस्लाम का बोल बाला था। इस्लाम

फैलता रहा, कुर्आन उतरता रहा, इस्लाम पूरे अरब में फैल गया, जो यहूद मुखालफत करते रहे वह मदीने से बाहर कर दिये गये, सन् 10 हिज्री में हमारे प्यारे नबी ने अपने सहाबा के साथ हज किया इस हज को हिज्जतुल वदाअ़ कहते हैं। हज व उम्रा के बाद आप मदीना तय्यिबा तशरीफ़ ले गये। अब कुर्आन पूरा उतर चुका था आखिरी आयत सू–रए–बक़रा की आयतः 281 नाज़िल हो चुकी थी, आप 63 साल के हो चुके थे अब अल्लाह का फैसला हुआ कि आप को बुला लिया जाय चुनांचि 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हिज्री को आप की वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आपकी वफात उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा रज़ि0 के हुजरे में हुई और उसी हुजरे में आपकी क़ब्रे मुबारक है।

अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत से मुअ़जिज़े दिये थे, मुअ़जिज़ा ऐसे काम को कहते हैं जो आम आदत के ख़िलाफ हो, आप का बड़ा मुअ़जिज़ा आप पर कुर्आने करीम का उतरना है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी से लिखना पढ़ना नहीं सीखा था मगर आपने जो अल्लाह का कलाम बयान किया उस की ज़बान और उसके बयान को देख कर बड़े बड़े अरबी दां उसका लोहा मानते हैं, और बावजूद चैलेंज के आज तक कोई अरबी दां उसकी छोटी से छोटी सूरत जैसी सूरत भी न बना सका। और कुर्आन का दावा है कि कोई भी वैसी सूरत बना नहीं सकता।

आपका एक बड़ा अहम मुअ़जिज़ा मेराज का है, आप को अल्लाह तआला ने एक रात बुराक़ सवारी पर सवार कराके मक्के से शाम में बैतुल मकदिस ले गया फिर वहां से सातवें आसमानों के ऊपर सिदरतुल मुन्तहा तक ले गया, हज़रत जिब्रील आप के साथ थे फिर हज़रत जिब्रील का साथ छूट गया, अल्लाह तआला आपको जहां तक चाहा ले गया, आप से बातें कीं, अल्लाह तआला ने आप को जन्नत का मंज़र दिखाया, दोज़ख़ का मंज़र दिखाया वहीं आप को नमाज़ों का तोहफा दिया। आपने सातों आसमानों पर कई अंबिया अलैहिमुस्सलाम से मुलाकातें कीं और रात ही में इतने तवील सफर के बाद वापस आ गये, मेराज़ का बयान भी पूरी किताब चाहता है, यहां इख़्तिसार से बयान किया गया।

आप का खुला हुआ मुअ़जिज़ा उतूने हन्नाना है आप मस्जिद में एक खजूर के तने के खम्भे से टेक लगा कर खुत्बा दिया करते थे जब आप के लिए मिम्बर बनाया गया तो आप ने उस खजूर की लकड़ी के खम्भे को छोड़ कर मिम्बर पर खुत्बा देने खड़े हुए तो वह खुजूर का खम्भा आवाज़ से रोने लगा तो आप मिम्बर से उतर कर उस खजूर के खम्भे के पास गये और उस पर हाथ रख दिया तो चुप हो गया।

सुल्हे हुदैबिया के मौक़े पर लगभग 1400 सहाबा आप के साथ थे वहां पानी ख़त्म हो गया, थोड़ा सा पानी किसी बरतन में था आपने अपनी उंगलियां उस में डाल दीं और पानी निकलने लगा, इतना पानी निकला की 1400 लोगों ने उस से वुजू भी किया और पिया भी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। एक हज़ार से ज़ियादा सहाबा के साथ खन्दक़ की खुदाई में लगे हुए थे, सब भूखे थे, हज़रत जाबिर के घर एक साअ़ (तीन किलो, दो सौ ग्राम) जौ का आटा था उसकी रोटियां पकाईं गईं, एक बकरी के बच्चे का गोश्त पकाया गया हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमाई तो एक हज़ार सहाबा ने पेट भर भर कर खाया और बच भी रहा यह भी आप का खुला हुआ मोअ़जिज़ा था जिसे सहाबा ने अपनी खुली आंखों से देख कर अपना ईमान मज़बूत किया, आपके मुअ़जिज़ों के बयान के लिए एक दफ़्तर चाहिए हम इतने ही पर इकतिफ़ा करते हैं और कहते हैं की आपकी हर हर बात मुअ़जिज़ा थी। आपकी हर हर बात बयान करने में बड़ा सवाब है, लेकिन आपकी तालीमात पर अमल किये बिना नजात मुमकिन नहीं इसलिए आपकी मुख़्तसर और ज़रूरी तालीमात का ज़िक्र किया जाता है।

आपने फरमाया कि गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई और इबादत के लाइक़ नही और गवाही दो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। इस कल्मे में पूरा इस्लाम आ जाता है। इसी लिए जब कोई गैर मुस्लिम ईमान लाना चाहता है तो उस को यही कलमा पढ़ाया जाता है। इस कल्में में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानना बहुत अहम है, जब हम ने अपको अल्लाह का रसूल मान लिया अल्लाह के पास से पैग़ाम लाने वाला मान लिया तो हमने अल्लाह के रसूल के वास्ते से अपने को अल्लाह के हवाले कर दिया अब हमारे लिए ज़रूरी हुआ कि पैदाइश से वफ़ात तक बचपन की तालीम व तरबीयत, जवानी में रोज़ी कमाने, शादी विवाह करने, कोई पेशा अपनाने रिश्ता नाता करने, मुआमला करने, मरने पर मुर्दे को नहलाने, कफ़नाने, दफ़नाने गरज़ की ज़िन्दगी के हर काम में अल्लाह के नबी से मालूम करें कि इस बारे में अल्लाह का क्या हुक्म है और उस पर अमल करें यानी हर काम में अल्लाह के रसूल की इत्तिबाअ़ करें और उस पर अमल करें। लेकिन बाज़ इबादात की अहमियत के पेशे नज़र उन को अलग से बयान फ़रमा दिया उन में सब से अहम नमाज़ है, हुक्म हुआ कि नमाज़ काईम करो यानी जिस तरह नमाज़ के एहतिमाम को बताया गया उसको अपनाओ और फरमाया की जो बिला उज़्र नमाज़ छोड़े और उसकी अहमियत व फ़रज़ीयत को न माने वह इस्लाम से खारिज़ है। दूसरी अहम इबादत रमज़ान के रोज़े हैं जो हर आकिल बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ हैं। तीसरी अहम इबादत ज़कात है जो शख्स 200 दिरहम (लगभग 612 ग्राम चांदी का मालिक हो या इतनी चांदी खरीदने के पैसे का मालिक हो वह अपने माल या नक्दी पर साल गुज़र जाने पर माल का चालीसवां हिस्सा ग़रीब मुसलमानों को दे। खेती के गल्ले पर भी ज़कात है तिजारती माल पर भी ज़कात है, जानवरों पर

शेष पृष्ठ .....15...पर..

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनु0 मु0 हसन अंसारी

बुन्यादी इस्लामी अक़ायदः-

इस दुन्या का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसका होना क़तई और उसका मिटना मुहाल है। वह तमाम सिफ़ात वाला और ऐब से पाक है। वह सब कुछ जानने वाला और सब पर क़ादिर है और तमाम कायनात उसी के इरादे से है। वह हयात वाला, है सुनने वाला और देखने वाला है। कोई उस जैसा नहीं है। उसका कोई मददगार नहीं। कोई उसका शरीक नहीं। इबादत का सिर्फ़ वही मुस्तहक़ है। वही मरीज़ को शिफ़ा देता, मख़लूक को रोज़ी पहुंचाता और उनकी तकलीफ़ों को दूर करता है उसकी शान हैः—

तर्जुमाः *"उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उससे फ़रमा देता है "हो जा" तो वह हो जाती है।" (सूरःयासीन—82)*

अल्लाह तआला न किसी दूसरे के क़ालिब में उतरता है न किसी से मुत्तहिद होता है। वह न जौहर है, न अर्ज़, न जिस्म, वह किसी जगह महदूद नहीं है। क़यामत के दिन मोमिनों को उसका दीदार होगा। जो वह चाहता है सो होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। वह ग़नी है किसी चीज़ का मुहताज नहीं उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता। उस से पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है किसी के वाजिब करने से कोई चीज़ उस पर वाजिब नहीं होती। हिम्मत उसकी सिफ़त है। उसके अलावा कोई हाकिम नहीं।

तक़दीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ़ से है। वही वाक़ियात को उनके वजूद से पहले वजूद के क़ाबिल बनाता है। उसके फ़रिश्ते बन्दों के आमाल लिखने और मुसीबत से उनकी हिफ़ाज़त करने और भलाई की तरफ़ बुलाने पर मामूर हैं। और ख़ुदा की मख़लूक़ शैतान भी है जो लोगों के लिए बुराई का सबब बनता है और उसकी मख़लूक़ में जिन्नात भी हैं। कुर्आन अल्लाह का कलाम है। उसके अल्फ़ाज़ सब अल्लाह की तरफ़ से हैं। वह मुकम्मल है। तहरीफ़ (परिवर्तन) से महफ़ूज़ नहीं। अल्लाह की सिफ़ात में किसी तरह की कमी जियादती करना जायज़ नहीं। मौत बर हक़ है। ज़िन्दगी का लेखा—जोखा बरहक़ है। पुलसिरात कुर्आन व सुन्नत से साबित है। जन्नत और दोज़ख़ बर हक़ है। वह पैदा की जा चुकी है।

कबायर के मुरतकिब के हक़ में अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी वह हमेशा दोज़ख़ में नहीं रहेंगे। गुनहगार के लिए कब्र का अज़ाब और मोमिन के लिए क़ब्र का आराम हक़ है। मुनकर नकीर का सवाल करना बर हक़ है। मख़लूक़ की तरफ़ नबियों का आना बर हक़ है। और उनकी ज़बानी और उनके वास्ते से

खुदा का अपने बन्दों को अम्र व नहीं का मुकल्लफ़ क़रार देना बर हक़ है। नबियों की कुछ ऐसी सिफ़ात होती है जो आम इन्सानों से उन्हें अलग करती हैं और जो दूसरे इन्सानों में नहीं पायी जातीं और वह उनकी नबूवत की दलील होती हैं। जैसे "मोजज़ात सलामती–ए–सिफ़ात और मिसाली अख़लाक़" नबियों को जानबूझ कर गुनाह करने से महफ़ूज़ कर दिया गया है।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं। "आपके बाद कोई नबी नहीं। आप की दावत सारी दुन्या तमाम इन्सानों और जिन्नात के लिए हैं।" इस बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब नबियों में अफ़ज़ल हैं। आप की रिसालत पर ईमान लाना ज़रूरी है। इस्लाम ही सच्चा दीन है। इसके अलावा कोई दीन खुदा के यहां मक़बूल और आख़िरत में नजात का ज़रिया नहीं।

मेराज बर हक़ है। आप को बेदारी की हालत में रात में बैतुलमक़दिस और वहां से जहां खुदा ने चाहा ले जाया गया।

औलिया–ए–अल्लाह की करामात बर हक़ हैं। जिस को खुदा चाहता है इन से नवाज़ता है। तकलीफ़ शरअी किसी से साक़ित नहीं होती। चाहे वह विलायत, मुजाहिदा और जेहाद के कितने ही बुलन्द मक़ाम पर फ़ायज़ हो वह फ़रायज़ का हमेशा मुकल्लफ़ रहेगा। कोई हराम चीज़ या गुनाह जब तक आदमी के होश या हवास दुरूस्त हैं। उसके लिए जायज़ न होगी। नबूवत विलायत से कतई अफ़ज़ल है। कोई वली चाहे कितना ही बड़ा हो किसी सहाबी के दर्जा को नहीं पहुंच सकता। सहाबाकिराम की औलिया–ए–इजाम पर फ़ज़ीलत, सवाब की कसरत और खुदा के यहां मक़बूलियत की अज़मत पर है न कि अमल की कसरत पर।

नबियों के बाद बेहतरीन मख़लूक सहाबा किराम हैं। अशर–ए–मुबश्शरा के लिए जन्नत और ख़ैर की हम गवाही देते हैं। अहले बैत और अज़वाज मुतहरात की अज़मत व तौक़ीर (सम्मान) करते हैं। उनसे महब्बत रखते हैं इस तरह बद्र वालों और बैय्यत रिज़वान में शरीक़ होने वालों के बुलन्द मक़ाम के मोतरिफ़ हैं। अहले सुन्नत तमाम सहाबाकिराम की अदालत के क़ायल हैं।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इमाम व ख़लीफये बर हक़ थे। फिर हज़रत उमर रज़ि0, फिर हज़रत उस्मान रज़ि0, फिर हज़रत अली रज़ि0। हज़रत अबू बक्र वह हज़रत उमर इस उम्मत में एक के बाद दूसरे सब से अफज़ल हैं। हम सहाबा किराम का सिर्फ़ ज़िक्रे ख़ैर ही करते हैं। वह हमारे दीनी क़ायद हैं। उनको बुरा भला कहना हराम है। और उनकी ताज़ीम वाजिब है।

हम "अहले क़िबला" में से किसी को काफिर करार नहीं देते। हां मगर जो अल्लाह के इस कायनात के ख़ालिक़ और मालिक होने का इन्कार करे, या ग़ैर अल्लाह की इबादत करे या नबी और आख़िरत का इन्कार करे या ज़रूरियात दीन में से किसी चीज़ का इन्कार करे वह काफ़िर है, गुनाहों को जायज़ समझना कुफ़्र है। शरीअत का मज़ाक़ उड़ाना कुफ्र है अम्र बिल मारूफ़ और नहीं अनिल मुनकर वाजिब है। हम तमाम नबियों और उन पर नाज़िल होने वाली किताबों पर ईमान रखते हैं और नबियों में बाहम तफ़रीक़ नहीं करते। ईमान ज़बान से इक़रार व दिल की तस्दीक़ का नाम है। क़यामत के अलामात पर जैसा कि हदीस में बयान किया गया है, हम यक़ीन रखते हैं। मेल जोल और एकता को हम हक़ और सवाब की चीज़ समझते हैं और फूट वह तफ़रीक़ को गुमराही और अज़ाब का सबब समझते हैं। ◆◇◆

ज़िक्रे नबीये पाक.....

भी ज़कात है उलमा से मालूम करके इन सब की ज़कात अदा करें। चौथी अहम इबादत हज है। यानी अल्लाह के घर काबा का हज, यह जिन्दगी में एक बार उस पर फर्ज़ है जो हज के ज़माने में मक्का मुकर्रमा पहुंचने की इस्तिताअत रखता हो जब कि जिन की रोटी कपड़े का वह ज़िम्मेदार है उनका खर्च मुहय्या हो।

यह पांच चीज़ें कलमा, नमाज़ रमज़ान के रोज़े, माल की ज़कात और हज आपकी तालीमात में ज़ियादा अहम हैं इसलिए खास तौर से इन का ज़िक्र किया गया। लेकिन याद रहे सबसे अहम बात यह है कि जिन कामों को अल्लाह के रसूल ने करने का हुक्म दिया है उनकी अदायगी में कोताही न करें और जिन बातों से प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोका है उन के करीब न जाएं।

अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में फ़रमाया "बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और खूब खूब सलाम भेजा करो"

लिहाज़ा हम मुसलमानों पर फर्ज़ है कि आप पर दुरूद व सलाम पढ़ा करें इसका इन्तिज़ाम हमारे लिए खुद अल्लाह तआला ने कर दिया है। अगर हम सुन्नते मुअक्किदा के साथ फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करते रहें तो ग्यारह बार रोजाना दूरूद और 17 बार रोज़ाना सलाम पढ़ने का मौका पाते रहें। लेकिन हम को चाहिए कि हम अलग से भी कुछ दुरूद व सलाम पढ़ने का मामूल बनाएं। लेकिन यह मामूल इनफ़िरादी हो मस्जिदों में लाउडस्पीकर पर पढ़ने का न हो कि यह तो दीन में नई बात होगी जो सहाबा के ज़माने में न थी। अइम्म–ए–मुज्तहिदीन के ज़माने में भी न थी अल्लाह हम को अपनी महब्बत दे और अपने नबी और उनकी सुन्नतों की महब्बत दे सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़लक़िही मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारक व सल्लम। याद रहे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी सुनें या ज़बान से कहें या लिखें तो दुरूद पढ़ना वाजिब होता है। ◆◇◆

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद के सरदार

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुखतसर सीरत

—मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर फारूकी रह0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का शहर में कुरैश के सरदार हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के घर पैदा हुए. आप के वालिद साहब का नाम अब्दुल्लाह और माँ का नाम आमिना था। आपकी पैदाइश रबी उल अव्वल के महीने में दो शंबे के दिन सुब्हे सादिक़ के वक़्त हुई, तारीख आठवीं या नवीं या बारहवीं थी अंग्रेज़ी तारीख किसी ने 20 और किसी ने 22 अप्रैल 571 ई0 लिखी है। उस वक़्त ऐसी ऐसी अजीब बातें जाहिर हुई कि वैसी अजीब बातें पहले कभी नहीं जाहिर हुई थीं, बाज जानवरों ने इन्सानी कलाम में आप के आने की खुशखबरी सुनाई, बाज दरख्तों से आप के आने की आवाजें सुनी गई, बाज बुत परस्तों ने अपने बुतों से आप के आने की खबर सुनी, फारिस के बादशाह और रूम के बादशाह को ख्वाब में आप के आने की खबर दी गई और उन को ख्वाब में यह भी बताया गया कि उन की हुकूमतें बल्कि दुन्या की हुकूमतें आने वाले अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने झुक जाएंगी।

आप अपनी माँ के पेट ही में थे कि आप के वालिद साहब अब्दुल्लाह की वफात हो गई और आप चार या छः साल के हुए तो माँ आमिना का भी इन्तिकाल हो गया।

आप ने किसी से पढ़ना लिखना नहीं सीखा न किसी से कोई हुनर सीखा, यहां तक कि शाइरी (काव्य विद्या) जिस का अरब में बड़ा चलन था वह भी नहीं सीखी, लेकिन अल्लाह ने आप को तमाम आलम का उस्ताद बना दिया।

हज़रत हलीमा जो आप को दूध पिलाने के लिए ले गई थीं आप से बहुत ही

—हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

अजीब अजीब बातें देखीं। उस वक्त मक्के के कुरैश की औरतें अपने बच्चों को दिहात की औरतों से दूध पिलाती थीं हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दाई हलीमा दूध पिलाने के लिए ले गई थीं।

आप का शक्के सद्र (सीना खोला जाना) चार बार हुआ दो बार नुबूवत से पहले और एक बार बेअ़सत (नबी बनाए जाने) से पहले और एक बार मेअ़राज से पहले, पहली बार जब शक्के सद्र हुआ तो आप दाई हलीमा के यहां थे आप अपने रज़ाई भाई (दूध शरीक भाई) के साथ बकरियां चराने जंगल चले गये थे अचानक आप के रजाई भाई डर कर भागते हुए दाई हलीमा के पास आये और बताया कि ऐ माँ मेरे कुरैशी भाई को दो मर्दों ने जो सफेद कपड़े पहने हुए थे लिटा दिया और सीना फाड़

दिया, यह सुन कर दाई हलीमा बहुत घबराई और फौरन भागती हुई जंगल गई वहां देखा कि आप सही व सालिम हैं मगर चेहरे पर खौफ मालूम हो रहा था फिर आप ने दाई हलीमा को सारा वाकिआ सुनाया। शक्के सद्र जो चार बार हुआ हर बार फिरिश्ते आप का मुबारक दिल सीने से निकाल कर एक तश्त (प्लेट) में रख कर ज़म ज़म से धोते थे।

आप बुत परस्ती और बेहयाई से हमेशा दूर रहे आप की सच्चाई और अमानत दारी (न्यास धारिता) नुबूवत से पहले ही मक्के में मशहूर और मानी हुई थी यहां तक कि लोग आप को सादिक (सच्चा) और अमीन (विश्वस्नीय) के नाम से पुकारते थे।

जब आप की उम्र पचीस साल की हुई तो हज़रत खदीजा से आप का निकाह हुआ जो कुरैश खानदान में बड़ी दानिशमन्द (बुद्धिमान) और दौलतमन्द (धनवान) औरत थीं उन्होंने आप के औसाफ (गुण) और कमालात (विशेषताएं) सुन कर अन्दाज़ा लगा लिया था कि जिस नबी के आने की खबर यहूदी और ईसाई उलमा देते हैं लगता है यह वही हैं, हज़रत खदीजा की उम्र आप से निकाह के वक्त चालीस साल थी जब कि आप पचीस साल के थे हज़रत इब्राहीम के सिवा आप की सारी औलादें हज़रत खदीजा ही से हुई और हज़रत इब्राहीम, हज़रत मारिया से पैदा हुए थे।

जब आपकी उम्रे शरीफ चालीस साल की हुई तो 17 रमजान या 24 रमजान दोशंबे के दिन जब कि खुसरू परवेज़, ईरान के बादशाह के तख्त पर बैठने का बीसवां साल था, आप को वह दौलत अता हुई जो रोजे अज़ल (अनादिकाल) से आप के नाम लिखी हुई थी जिस की दुआ हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह ने मांगी थी और जिस की बशारत (शुभ सूचना) हज़रत मसीह ने दी थी यानी अल्लाह तआला ने आप को अपना रसूल बनाया और सारे आलम की तरफ आप को मबऊस किया यानी सारे आलम का रसूल बनाया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

आप ने 23 साल तक बड़ी शफकत (ममता) बड़ी राफत (दया) बड़ी जांफ़िशानी (परिश्रम) बड़ी जफाकशी (श्रम) के साथ रिसालत की जिम्मेदारियों को पूरा किया और इस राह में बड़ी बड़ी तक्लीफें उठाई, उस वक़्त दुन्या में हर तरफ इबलीस का राज था कुफ्र व शिर्क (नास्तिकता व अनेकेश्वरवाद) और हर किस्म के मजालिम (अत्याचारों) से दुन्या में अंधेरा छाया हुआ था ईसाई, यहूदी, मजूसी सब एक हालत में थे यानी सब बुराईयों में मुबतला थे अरब व अजम (अरब के अतिरिक्त) सब का एक सा बुरा हाल था फ़वाहिश (अशलीलता) व मआ़सी (पापों) को कोई ऐब न समझा जाता था चोरी और लूट लोगों का पेशा बन चुका था बाज लोग अपनी औलाद को भी अपने हाथ से क़त्ल कर देते थे उस हादिये बरहक (सच्चे मार्ग दर्शक) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुन्या की काया पलट दी और ईमान की रौशनी से

दुन्या को जगमगा दिया थोड़े ही दिनों में आप की तालीम ने खुदा परस्तों की एक बड़ी जमाअ़त तैयार कर दी जो आला तरीन अखलाक (उच्चतर आचारण) और कामिल तरीन जुहद व तक्वे (वैराग्य तथा संयम) में उस मरतबे पर थे कि तारीखे आलम उसकी मिसाल पेश करने से आजिज (असमर्थ) है।

नुबूवत के बाद आप 13 सालों तक मक्के ही में रहे फिर अल्लाह के हुक्म से हिजरत कर के आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये दस साल मदीने में कियाम रहा उन दस सालों में इस्लाम विरोधियों से आप को 19 लड़ाइयां लड़ना पड़ीं।

आप से बहुत से मुअ़ज़िज़ात (आदत के खिलाफ बातें) जाहिर हुये आप का सब से बड़ा मुअ़जिज़ा कुर्आन शरीफ है जिस में फसाहत वह बलाग़त (वाक्य सरलता तथा सुभाषिता) का एअ़जाज (चमत्कार) भी है और गैब की खबरों और असर की कूवत (प्रभाव व शक्ति) और जल्द असर करने की तासीर का एअ़जाज भी है।

नुबूवत के बारहवें साल जब आप की उम्रे शरीफ 51 साल नौ माह की थी अल्लाह तआला ने आप को मेअ़राज अता फरमाई यानि आप आस्मानों पर बुलाये गये जन्नत व दोजख के मंजर दिखाये गये और आलमे मलकूत (फरिश्तों का जगत) में अजाइबात (आश्चर्यजनक बातें) और अल्लाह तआला की बड़ी बड़ी निशानियां दिखाई गई।

आप के अखलाक की यह कैफियत थी कि आप के अस्हाब़ (साथियों) में से हर शख्स यह समझता था कि आप सब से जियादा मुझ ही पर करम फरमाते हैं। आप हमेशा गरीबों और लाचारों की तरफ जियादा तवज्जुह फरमाते यतीमों (अनाथों) और बेवाओं का बड़ा खयाल रखते थे। आप के अस्हाब में अगर कोई बीमार होता तो उस की इयादत को तशरीफ ले जाते, जनाज़ों के साथ जाते और नमाज़ पढ़ कर दफ़न करके वापस आते, किसी की आखरी हालत सुनते तो उसके पास जा कर बैठ जाते, रूए अनवर (चेहरा) उस की आंखों के सामने होता ऐसे मरने वालों की खुशकिस्मती का क्या कहना।

दुन्या का ऐश व आराम कभी आप ने नहीं उठाया, मोटे कपड़े पहनते थे और अक्सर आप के घर में फाक़ा हो जाता था, कभी ऐसा न हुआ कि आप ने लगातार दो दिन दोनों वक्त खाना खाया हो। अल्लाह तआला ने आप को बहुत ज़ियादा खूबसूरत बनाया था यहां तक कि सहाबा का बयान है कि आप का चेहरा चौदहवीं रात के चांद से ज़ियादा खूबसूरत लगता था। जिस रास्ते से आप गुजर जाते देर तक उस रास्ते में खुशबू बाकी रहती सहा–बए–किराम उस खुशबू से पहचान लेते कि आप इधर से गुजरे हैं।

जब उम्रे शरीफ़ 63 साल की हुई और हिज़रत का ग्यारहवां साल शुरु हुआ तो 12 रबीउल अव्वल दोशंबे के दिन सुब्ह में चाश्त के वक़्त (लगभग 9, 10 बजे) 14 दिन बीमार रह कर आप इस आलम से दूसरे आलम में

तशरीफ ले गये यानी आप की वफ़ात हो गई और अल्लाह तआला की खुसूसी रहमत में आप जा बसे "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।

आखरी वसीयत जो आप ने मुसलमानों को फरमाई वह यह थी कि "नमाज़ की हिफाजत करना और अपने लौंडी गुलामों के साथ नेक सुलूक करना" (अब लौंडी गुलाम नहीं रहे चाहिए कि इस हुक्म के तहत अपने मातहतों और छोटों के साथ अच्छा सुलूक किया जाय) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरे में जहां आप की वफात हुई उसी जगह पर आप की कब्रे शरीफ बनाई गई जिस की जियारत के लिए सारी दुन्या के मुसलमान आते हैं। सलातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व अ़ला आलिही व असहाबिही अजमईन।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा ....

7. यानी तुम भाग कर पहाड़ों पर चढ़ने लगे और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आवाज़ दे रहे थे मगर हंगामे में सुनाई नहीं पड़ती थी अंततः कअ़ब पुत्र मालिक ने चिल्ला—चिल्ला कर पुकारा तो लोग एकत्र हुए।

8. तुम ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल दुखाया तो उसके बदले में तुम पर परेशानी आई, आगे याद रखो कि कुछ हाथ से जाये या कोई मुसीबत आए अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा मत करना वरना इसी प्रकार मुसीबत में पड़ोगे।

9. जंग में जो होना था हुआ फिर जो लोग रह गये थे उन पर अल्लाह की ओर से एक नींद आई उसके बाद भय समाप्त हो गया और सुकून छा गया फिर सब लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस—पास एकत्र हो गए और लड़ाई शुरु हो गई, मुनाफिक़ लोग बोले अब क्या होगा हमारी बात अगर मानी गई होती और यहां न आते तो हम मारे ही क्यों जाते, अल्लाह तआला कहता है जिन को मरना तय था वे आ कर रहते और इसका फायदा यह हुआ कि मुख़लिस (निष्ठावान) और मुनाफिक़ (कपटी) अलग— अलग हो गए दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

10. एक ग़लती से दूसरी गलती होती है, पहाड़ी पर ठहर न सके उसका यह नुकसान भुगतना पड़ा।

11. काफिर और मुनाफ़िक़ मुसलमानों को बहकाते थे कि अगर आराम से बैठे रहते तो क्यों मारे जाते? ताकि उनको पछतावा हो मगर अल्लाह ने इसको उन्हीं के दिलों की हसरत बना दिया कि ईमान वालों का विश्वास अल्लाह पर क़ायम रहा कि वही जिलाता और मारता है, आगे यह भी कहा कि अगर इस रास्ते में मारे भी गए तो अल्लाह की मग़फ़िरत और पुरस्कार उसका बदला है, कहां उसकी तुलना दुन्या की यह पूंजी, बस जिन काफ़िरों ने चाहा था कि यह चीज़ ईमान वालों के लिए पछतावे का कारण बने वह खुद इन काफ़िरों के लिए पछतावे का कारण बना दी गई। ❖❖

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मुआशरे का बिगाड़ और हमारी ज़िम्मेदारी

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

कुर्आन मजीद में आया है "और तुम में एक जमाअ़त ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को भलाई की तरफ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग फलाह पाने वाले हैं" कुर्आन मजीद की मुन्दर्जा बाला आयत की तिलावत से बारहा दिल में ख्याल पैदा हुआ कि मुसलमान होने की हैसियत से ही हमें ऐसी जमाअ़त बनने की ताक़ीद की गई है जो भलाइयों का हुक्म देने वाली हो और बुराइयों से रोकने वाली हो और दर अस्ल इसी जमाअ़त के लोग अल्लाह की रहमत के मुस्तहिक़ और दोज़ख़ से नजात पाने वाले होंगें। हमारे मुआशरे में आज कल नजाबत व शराफ़त का मेअ़यार ये समझा जाता है कि कोई अपने को सय्यद कहता है और आले रसूल से अपना तअ़ल्लुक़ जाहिर करके फ़ख़्र करता है और अपने नाम के साथ सय्यद, हाशमी जअ़फ़री, रिज़वी, काज़मी, वग़ैरह लिख कर अपनी शराफत का इज़हार करता है या फिर अपना नसब खुल्फाये राशिदीन और दूसरे सहा–बए–किराम रज़ि0 से मिला कर खुश होता है और फख़िया अपने नामों के साथ सिद्दीक़ी, फारूक़ी, अलवी वग़ैरह लिख कर ये ज़ाहिर करता है कि हमारा नसब उन बुज़ुर्गों से जा मिलता है लेकिन उन्हें ये मालूम होना चाहिए कि हम उस वक़्त तक बाइज़्ज़त नहीं हो सकते जब तक हम अपनी जिन्दगियों को अख़्लाक़े इस्लामी और ज़ेवरे ईमानी से आरास्ता न कर लें ख़्वाह हमारा सिलसि–लए–नसब कुछ भी हो अल्लाह तआ़ला ने फरमाया "और तुम को मुख़्तलिफ़ क़ौमें और ख़ानदान बनाया ताकि एक दूसरे को शनाख़्त कर सको, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुम सब में बड़ा शरीफ वह है जो सबसे ज़ियादा परहेज़गार हो, अल्लाह तआ़ला जानने वाला, खबरदार है"

इसी तरह मुन्दर्जा ज़ेल आयत से भी इस बात की तस्दीक़ होती है "बिला शुबह जो लोग ईमान लाये और अ़मल सालेह किये सो वह दुन्या की बेहतरीन हस्ती हैं" सूरतुल अ़स्र में तो शराफ़त व नजाबत का मेअ़यार आमाले सालेहा को क़रार दे कर नौअ़े इन्सान को इसके ख़िलाफ करने की सूरत में नुक्सान व हलाकत की वअ़ीद सुना दी गई।

"क़सम है ज़माने की कि इन्सान बड़े ख़सारे में है मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और आपस में ताकीद करते रहे सच्चे दीन की और ताकीद करते रहे तहम्मुल की" हमारे बा इ़ज़्ज़त होने का मेअ़यार जब ये है तो फिर हम इस मेअ़यार को खुद क्यों न अपनाएं और "पिदरम सुल्तान बूद" के मक़ूले पर अ़मल करके क्यों खुश हों? क्यों न हम ऐसी जमाअ़त में शामिल हों जिसके लिए ख़ालिक़े कौनैन ने बशारत

दी हो कि वही लोग नजात पाने वाले हैं और उनके लिए नुफूसे कुदसिय्या की इस्तिलाह इस्तेअ़माल की गई।

जब हम अपने आमाल पर नज़र डालते हैं तो दूसरों को अ़मल की तरफ तवज्जो दिलाते हुए शर्म तो ज़रूर आती है लेकिन शायद इसी बहाने हम में भी कुछ तब्दीली रूनुमा हो, और बात ये है कि मुआ़मला सिर्फ मुतवज्जेह करने का है वरना कौन सी ऐसी बात है जो हमारे मुआ़शरे के हर शख्स को न पहुंचती हो, लेकिन इस वक़्त मुआ़मला ये है कि हमारी क़दरों की बुन्यादें हिल चुकी हैं न हम में मज़हबी अक़दार बाकी हैं न अखलाकी और न हम अपने खानदान की रिवायात के अमीन रहे हैं और न अस्लाफ के हौसलों और कारनामों के सही जानशीन, हम अपने नामों के साथ हाशमी, अलवी, सिद्दीक़ी, फारूक़ी, उसमानी अपने खानदानी तफख़्ख़ुर को ज़ाहिर करने के लिए लगाते ज़रूर हैं हम आले रसूल होने का दावा करते हैं, अबू बक्र सिद्दीक़ से अपना खूनी रिशता साबित करते हैं, हज़रत उमर फारूक़ को अपना जद्दे अमजद कहते हैं, हज़रत उस्मान ग़नी को अपना मोरिसे आला साबित करते हैं लेकिन क्या हम में नयाबते रसूल की कोई झलक नज़र आती है? क्या सिद्दीकियत की कोई रमक़ हम में बाक़ी है? क्या फारूके आजम की हक गोई हमारे अन्दर मौजूद है? क्या शाने उस्मानी की शर्मो हया और सिफते दाद व दहिश हम से छू कर गुज़री है क्या हज़रत अली के फक्र और जुरअते ईमानी की कोई निशानी हम में मौजूद है?

हैदरी फ़क्र है न दौलते उस्मानी है।
हम को अस्लाफ़ से क्या निस्बते रूहानी है।।

जरा ठण्डे दिल से सोचें कि अगर इस में से कोई सिफत हम में नहीं है तो हम किस मुंह से उनके जानशीन हुए उनकी औलाद होने, उनके वारिस बनने और उनकी शराफत व नजाबत अपने अंदर बाकी रहने का ढिण्ढोरा पीटते हैं। हमारी आदात व अतवार, हमारे अक़्वाल व अफआ़ल, हमारे रहन सहन के अंदाज़ और हमारी मुआ़शरती ज़िन्दगी से किसी तरह ये साबित नहीं होता कि हम उन बरगुज़ीदा हस्तियों के जानशीन और उनकी औलाद हैं, जो ज़िन्दा रहते थे तो दीन की सर बुलन्दी के लिए, और मरते थे तो इस्लाम की बरतरी के लिए बक़ौल अ़ल्लामा इक़बाल–

वह जो जीते थे तो जंगों की मुसीबत के लिए और अब सूरते हाल ये है कि–

हमारी हर इक बात में सिफला पन है–
कमीनों से बदतर हमारा चलन है।
लगा नाम आबा को हमसे गहन है।
हमारा क़दम नंगे अहले वतन है
बुर्जुगों की तौक़ीर खोई है हमने
अरब की शराफ़त डुबोई है हमने।

शराफ़त व नजाबत का फ़ख्र करने का तक़ाज़ा है कि हम अच्छी बात मालूम करने की कोशिश करें उस पर अमल पैरा हो कर उसे दूसरों तक पहुंचाएं अम्र बिल मअ़रूफ और नहीं अनिल्मुन्कर के फर्ज़ को पूरा करें। तब्लीग़ के अमल को इस्लाम में बड़ी फज़ीलत हासिल है हदीस शरीफ में है "तबलीग़ करो ख़्वाह एक ही आयत की हो" तबलीगे़ दीन करने वाले के लिए आं हज़रत सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम की दुआ है

"अल्लाह उस बन्दे को सर सब्ज़ व शादाब रखे जो मेरी बात सुने, फिर उसे याद करे और महफूज़ रखे फिर दूसरों तक पहुचाये"।

(जामेअ तिर्मिज़ी)

मसल मशहूर है कि "चराग़ से चराग़ जलते हैं" और ये भी कहा जाता है कि चराग़ पहले घर में रौशन करना चाहिए, दीन के मुआमले में भी यही सच है इंसान पहले अपनी शख़्सीयत के चराग को रौशनी बख़्शे, फिर अपने बीवी बच्चों की तरफ तवज्जुह दे, औलाद को दीनी तअ़लीम से आरास्ता करना और इस पर अ़मल पैरा करना यह मां बाप पर फर्ज़ है और औलाद का हक़ है कि "ऐ लोगो जो ईमान लाये हो, अपनी ज़ात और अपने अहलो अयाल को आग से बचाओ" यानि औलाद के मुआ़मले में मां बाप से सख़्त बाज़ पुर्स होगी और इसकी वजह से जवाब देही उन पर लाज़िम होगी, अगर तुम में से हर शख़्स इस पर अमल पैरा हो जाये, सिर्फ अपनी ज़ात तक नमाज़, रोज़ा और दूसरे शआ़इरे इस्लामी की पाबंदी करना काफी नहीं, बल्कि अपने मुतअ़ल्लिक़ीन की भी ज़िम्मेदारी हम पर है, हम इस फर्ज़ से सुबुकदोश नहीं हो सकते अल्लाह के सामने जवाब देह होना पड़ेगा जैसा कि मुन्दर्जा ज़ेल हदीस से साबित होता है "तुम सब हाकिम हो और तुम सब अपनी रिआ़या (अहलो अयाल) के जिम्मेदार हो"।

कितने शरीफ घराने आज कल ऐसी बद आमालियों बे एअतिदालियों और रस्मो रिवाज के बंधन में जकड़े हुए हैं, जिन से वह बजाए ज़िन्दगी में चैन व सुकून पाने के बे सुकूनी और इज़तराब में मुब्तला हो गये हैं, लेकिन "खिरद का नाम जुनूं पड़ गया जुनूं का खिरद" वाला मामला हमारे साथ हो रहा है, हम ज़रा सी कोशिश करके इस दुन्याए फानी की हसीन करिशमा साज़ी के चंगुल से निकल सकते हैं, और हक़ीक़त की दुन्या में दाख़िल हो कर खिरद व जुनूं के फर्क़ को भी समझ सकते हैं एक मरतबा हक़ व बातिल में तमीज़ पैदा करने की सलाहियत अगर हमारे अन्दर दोबारा आ गई तो कोई वजह नहीं कि हमारी मौजूदा हालत में तबदीली पैदा न हो और ये तो अल्लाह तआ़ला का फरमान है कि जब हक़ आता है तो बातिल उसके सामने ठहरने की हिम्मत नहीं कर सकता। लेकिन इसमें ज़रा सी हिम्मत से काम लेने की ज़रूरत है, और हमारी ज़रा सी कोशिश से बड़ी काया पलट हो सकती है, और ये मौजूदा बिगाड़ इसलिए हुआ कि हम ने अपनी आल व औलाद को दीनी तअ़लीम से महरूम रखा है, हम ने अपनी रिवायत से खुद बग़ावत की है, एक ज़माना था कि बच्चे को तअ़लीम की इब्तिदा ही कुर्आन पाक से होती थी दीन की मोटी–मोटी बातें उसको ज़हन नशीन करा दी जाती थीं नमाज़, रोज़ा की खुसूसियात व अहमीयत उस पर वाज़ेह कर दी जाती थीं और इन उमूर पर अमल करने की तलक़ीन की जाती थी, हलाल व हराम का बुन्यादी तसव्वुर उसके दिल व दिमाग़ में बिठा दिया जाता था, नेकी व बदी के

फज़ाइल, व मुज़मरात से आगाह करा दिया जाता था, अल्लाह तआला की वहदानियत का तसव्वुर, नबियों की बेअ़सत का मक़सद वाज़ेह कर दिया जाता था। इबतिदाई किताबों में–

रब का शुक्र अदा कर भाई।
जिसने हमारी गाय बनाई।।

जैसे कलिमात के ज़रिये अल्लाह तआला की मेहरबानियों का तज़किरह और उसके शुक्र की आदत डाली जाती थी, बर ख़िलाफ इसके अब इबतिदाई मराहिल की किताबें इस क़िस्म के कलिमात से भरी पड़ी हैं–

टूट बटूट की मोटर कार।
टूट बटूट ने खीर पकाई।।

वगैरह इस जैसी बेकार व मुहमल बातें बच्चों के ज़हनों को क्या जिला बख़्शेंगी, ऐसे खानदान जिन्हें अपने हसब व नसब पर फख़्र है, उन्होंने भी रस्मों रिवाज के बंधन में अपने आप को इतना जकड़ रखा है कि इस जाल से निकलना मुश्किल नज़र आता है, हमारी नौ जवान नस्ल जिस की तालीम व तरबियत हमारी अपनी कोताही की वजह से सही अंदाज़ पर नहीं हो सकी, बुराईयों में मज़ीद जकड़ती चली जा रही है और उनकी इस कजरवी की ज़िम्मेदारी हर खानदान के बुज़ुर्ग तबक़े पर आइद होती है जिसने नौ जवान नस्ल को अव्वलन सही तरबियत देने में कोताही की और अब उनके हाथों मजबूर मालूम होते हैं, और अकसर खानदानों में तो ऐसा महसूस होता है कि बड़ों ने छोटों के सामने न सिर्फ ये कि हथियार डाल दिये हैं बल्कि उनके क़दम ब क़दम चलने पर मजबूर हो गये हैं और उनके आमाल व अफआ़ल को सराहने लगे हैं और इस तरह राहे फरार इख़्तियार कर ली है, यक़ीन कीजिए कि अल्लाह तआ़ला के यहां हम सब को अपनी कोताहियों पर जबाव देह होना होगा।

यह ज़िन्दगी बहर हाल मुख़्तसर है और रोज़ाना किसी न किसी की मौत की शक़्ल में इस का अंजाम हमारे सामने है।

मौत से किस को रुस्तगारी है।
आज वह, कल हमारी बारी है।।

आज बेशुमार बुराईयां मुआशरे में पैदा हो चुकी हैं और उन में रोज़ अफ़ ज़ूं इज़ाफा ही हो रहा है, मालूम नहीं ये काफ़िलए मअ़सियत हमें कहां ले जायेगा और किस बहरे जुल्मात में ग़र्क़ करेगा अल्लाह तआ़ला ने हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मअ़रिफत अपनी कामिल हिदायत हम तक पहुंचा दी है और कुर्आन मजीद में हम से मुख़ातब हो कर वह पूछता है कि ऐ मेरे बन्दे! क्या अभी वह वक़्त नहीं आया कि तू सदाक़त की तरफ लौट आये? हमारे लब्बैक कहने का वह हर वक़्त मुन्तज़िर है।

आइये! हम सिद्क़ दिल से उसकी पुकार पर लब्बैक कहें अपनी मौजूदा हालतों में तबदीली पैदा करें अपनी आल व औलाद को इस तरफ आने के लिए तंबीह करें और फिर घर से बाहर अज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्त व अहबाब, हमसाये और अहले महल्ला और शहर को इस तरफ मुतवज्जेह करें क्या अजब अल्लाह तआला हमारी इस कोशिश को शरफे

कुबूलियत बख़्शें और हम अज्र व सवाब के मुस्तहिक़ ठहराये जायें–

इस जज़्बे के तहत हमें अपने हल्क़ए असर में अम्र बिल मअ़रूफ नहीं अनिलमुन्कर का प्रचार करना चाहिए, अल्लाह तआला हमारे इस काम में यक़ीनन मदद करेगा, और इसके अच्छे नताइज इन्शा अल्लाह जल्द हमारे और आपके सामने आयेंगे लेकिन इन नताइंज को सिर्फ दुन्यावी मनफअ़त पर ही महमूल न करना चाहिए, ये दुन्या तो चन्द रोज़ा है उस आखिरत की तरफ नज़र रखनी चाहिए जो हमेशा बाक़ी रहने वाली है और अस्ल ज़िन्दगी तो आख़िरत ही की है। (तअ़मीर हयात 10 सितम्बर)

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी .....

में से एक कारण यह भी है कि कोई विद्यार्थी किसी बिदअती या फासिक के पास शिक्षा लेने जाता हो और कोई भलाई की नीयत से उस का हाल बयान कर देना जरूरी है मगर इसी शर्त पर कि भलाई की नीयत हो ऐसा न हो कि ईर्ष्या ने उस को इस बात पर उभारा हो और शैतान ने यह खयाल पैदा कर दिया हो कि यह भलाई है। हालांकि वह ईर्ष्या हो तो इस पर खूब गौर कर लेना चाहिए, या किसी मुतवल्ली या हाकिम के बारे में कि वह सीधे रास्ते पर नहीं है या तो वह लायक नहीं या फासिक है या भोला भाला है या ऐसी ही कोई बात है तो उसकी बुराई ऐसे आदमी से करना अनिवार्य है जो उस का आफीसर है उस की सुधार कर सकता है यद्यपि सुधार नहीं कर सकता तो कम से कम उस की आदत को पहचान ले गा ताकि उसकी हालत के मुताबिक फैसला करे धोके में न रहे और कोशिश करे कि वह सीधे रास्ते पर क़ाइम रहे या फिर उसको उसके पद से हटा दे।

5. खुलम खुल्ला गुनाह करने वाले का नाम ले कर कह सकता है जैसे कि बदमाश है या खुला हुआ बिदअती है या खुले आम शराब पीने वाला है, या लोगों का माल हड़प करने वाला हो, या चुंगी लेने वाला हो या अवैध कर वसूल करने वाला हो, या अवैध कार्य पर कोई कार्यरत है ऐसी सूरतों में उस के नैतिक दोष का जिक्र करे जो उसमें खुल्लम खुल्ला मौजूद है इस के अलावा किसी दूसरी बात का जिक्र किया तो हराम है।

6. किसी में शारीरिक विकार है और वह उसी से पहचाना जाता है अर्थात चुन्धा या लंगड़ा है या बहरा या अंधा है, या भेंगा है अब बिना उस विकार को बताये हुए कोई पहचान नहीं सकता तो उसका विकार बयान करना वैध है जैसे फुलां अंधा, फुलां लंगड़ा मगर कारण सिर्फ पहचान कराना हो और उस के अलावा अगर कोई और नीयत है अर्थात अपमान वगैरह तो चुगली वैध नहीं, इस के साथ भी अगर उसको किसी गुण या उपाधि से पहचान करा सके तो इस शारीरिक विकार से उसका परिचय न कराये, यह 6 कारण हैं जिन पर तमाम उलमा का इत्तिफाक़ है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अशलीलता का युग (बेहयाई का ज़माना)

—इं0 जावेद इक़बाल

इस ज़माने में जिस विषय पर सब से ज़ियादा चर्चा चल रही है और जिस बात की ओर आमंत्रित किया जा रहा है वह महिलाओं की आज़ादी, उन के अधिकार और उन्हें बराबर का दर्जा दिये जाने की बात है। यह एक ऐसा सुन्दर सपना है जो महिलाओं को पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी देशों की ओर से दिखाया जा रहा है। महिलाओं की आज़ादी का मक़सद एक ओर तो उनके सौन्दर्य और यौवन को पुरुषों के लिए सरलता पूर्वक उपलब्ध कराना है, तो दूसरी ओर उद्योगपतियों के लिए अपने माल को बेचने के लिए उनके शरीर की नुमाइश करना है आरम्भ में पश्चिम ने अपने प्रभाव और वर्चस्व का प्रयोग इस मक़सद को हासिल करने के लिए ख़ूब किया मगर अब तो पूरी दुन्या इस घिनौने सपने को साकार करने की दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने के लिए बेचैन नज़र आ रही है। वर्तमान काल जिस में हम जी रहे हैं बेहयाई, निरलज्जता और वैश्यावृति के शिखर पर पहुंच गया है। यह निरलज्जता के कार्य पहले भी होते थे मगर सीमित दायरे में छुप छुपा कर। खुली हुई बेहयाई को इस से पहले कभी भी समाज में इज़्ज़त, शोहरत और प्रगति का दर्जा नहीं मिला था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था कि ईसाई सीधी राह से भटक गए हैं और यहूदी खुदा की लानत व फिटकार का शिकार हैं। इन्हीं ईसाइयों और यहूदियों ने आज मानवता को निरलज्जता और वैश्यावृत्ति जैसे घिनौने कार्यों में फंसाया है जिस का नतीजा है कि दुन्या ने आज इसी घिनौनी जिन्दगी को सभ्यता, संस्कृति और प्रगति समझ लिया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी एक हदीस में सावधान करते हुए कहा था कि मेरी उम्मत पर मेरे बाद जो फ़ितने और संकट आयेंगे उन में निरलज्जता और वैश्यावृत्ति का फितना सब से भयंकर और ईमान के लिए हानिकारक होगा।

(बुखारी: 5096)

इस ज़माने में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीनगोई (भविष्य वाणी) की सच्चाई को स्पष्ट देख रहे हैं।

बेहयाई, निरलज्जता और नग्नता के इस तूफान में विचित्र बात है कि मुसलमानों के अलावा दुन्या में कोई अन्य क़ौम, कोई संस्था, कोई आन्दोलन अपनी संस्कृति और सभ्यता की सुरक्षा का प्रयास करता नज़र नहीं आता और न ही, किसी को इस की चिन्ता है। केवल ईमान वाले हैं जिन्हें अल्लाह ने संवेदनशील बनाया है और निर्देश दिये हैं जिस के कारण वे इस अशलीलता के तूफ़ान को दुन्या में बर्बादी और आख़िरत में इस के भयानक

परिणाम को समझते हैं। मगर इंसान को अपनी विपरीत लिंग के प्रति विशेष आकर्षण होता है, जिस के कारण शैतान उन्हें सरलतापूर्वक विपरीत लिंग के जाल में जकड़ लेता है। इस ज़माने में तो नग्नता, बेहयाई, वैश्यावृत्ति और समलैंगिकता जैसे अवगुण और घिनौने कार्यों ने प्रगति, फैशन और मानव अधिकार जैसे सुन्दर सुन्दर नामों से दुन्या को शैतान के जाल में पूरी तरह पागल बना दिया है। उन्नतिशील देशों में शिक्षा, सभ्यता, कलचर, कला, मीडिया प्रत्येक का केन्द्र यही गन्दगी बनी हुई है। आज़ादी और अधिकार के नाम पर स्कूलों, कालेजों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों में यही फ़लसफ़ा मुख्य स्थान लिए हुए है। समाचार पत्रों का हर पृष्ठ और टी0वी0 चैनलों का हर एपिसोड इसी नग्नता और अशलीलता का प्रचार कर रहा है। व्यापारिक संस्थान इसी गन्दगी के सहारे अपना माल बेच रहे हैं।

इस गन्दगी भरे माहौल में मुसलमानों को गम्भीरता पूर्वक सोच समझ कर फैसला करना है कि वे अपनी नस्लों की सुरक्षा किस तरह करेंगे और इस पश्चिमी तूफान को किस हद तक स्वीकार करेंगे। महिलाओं की आज़ादी और अधिकार के नाम पर बेशर्मी व बेहयाई की जिन घिनौनी सीमाओं तक पश्चिमी सभ्यता जा चुकी है उस से तो हर सभ्य व्यक्ति को उबकाई आनी चाहिए मगर अफ़सोस हम मुसलमान भी उसी के पीछे क़दम बढ़ा रहे हैं।

आईये ज़रा ग़ौर करें हमारी इस्लामी शरीअत इस बारे में क्या हुक्म देती है।

1. सूरः नूर में महिलाओं को आदेश है कि वे अपनी ओढ़नियां अपने सीने पर डाले रहें"। इसी लिए महिलाओं की ओढ़नी या दुपट्टा इस्लामी सभ्यता का अनिवार्य अंग है, इस की पाबन्दी ज़रूरी है, क्योंकि कुर्आन में अल्लाह का हुक्म है।

2. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि हर दीन की कोई विशेष पहचान होती है, इस्लाम की बुन्यादी और नैतिक पहचान हया (लज्जा) है।

3. हज़रत अस्मा रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साली थीं एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके पास इस हाल में आईं कि कुछ बारीक कपड़े पहने हुए थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज़र फेर ली और फरमाया "औरत जब बालिग़ हो जाये तो उचित नहीं कि उस के शरीर का कोई भाग नज़र आए, सिवाये चेहरे और हाथों के"।

4. इसी सिलसिले में यह भी निर्देश है कि मर्द अपनी रानों और अपने गुप्तांगों को ढक कर रखें तथा औरतें अपने पतियों के अतिरिक्त अपना सौन्दर्य नामहरम मर्दों के सामने ज़ाहिर न करें।

5. एक निर्देश यह भी है कि मर्द औरतों वाला लिबास न पहनें और औरतें मर्दों वाला लिबास न पहनें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों के जैसे कपड़े पहनते हैं और औरतों जैसी चाल ढाल इख़्तियार करते हैं।

शेष पृष्ठ .....28...पर..

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः 9 जिलहिज्ज की शाम को मगरिब के वक़्त मगरिब पढ़े बगैर हाजी लोग अरफात से मुजदल्फा के लिए निकलते हैं उन में एक तादाद पैदल वालों की होती है, उन में कुछ लोग नावाकिफियत की बिना पर मुजदल्फा से पहले ही कियाम कर लेते हैं और वहीं मगरिब, इशा और फज्र पढ़ते हैं और सुब्ह को वहां से मिना आते हैं सुब्ह को उन को मालूम होता है कि उन्होंने रात मुजदल्फा में नहीं गुजारी ऐसे हाजियों के लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः मुजदल्फा का वकूफ (ठहरना) फज्र की नमाज़ के बाद सूरज के निकलने से पहले पहले वाजिब है लिहाजा ऐसे हाजी अगर सूरज निकलने से पहले मुजदल्फा से गुजरे हैं तो उन का वाजिब अदा हो गया लेकिन अगर सूरज निकलने के बाद मुजदल्फा से गुजरे तो वाजिब छूट गया, दम देना होगा।

(गुनीयतुल मनासिक जदीदः239)

प्रश्नः एक हाजी जो तमत्तुअ (तमत्तु) हज कर रहे थे उन्होंने एहराम खोलने के बाद कुर्बानी की उन के लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः तमत्तुअ हज़ करने वाले हाजी ने अगर एहराम पहले खोल दिया और कुर्बानी बाद में की तो उन की कुर्बानी तो हो गई मगर खिलाफे तरतीब होने की वजह से उन पर दम वाजिब होगा।

(रद्दुल मुहतारः2/467)

प्रश्नः एक हाजी को कुर्बानी के दिनों में हल्क (सर मुंडाने) का मौक़ा नहीं मिला उन्होंने कुर्बानी के दिनों के बाद मुंडाया उनके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः अगर किसी हाजी ने 12 जिलहिज्ज तक सर नहीं मुंडाया न कतराया बाद में सर मुंडाया या कतराया तो उस का हज हो जायेगा मगर उस पर दम वाजिब होगा।

(दुर्रे मुख्तारः 2/470)

प्रश्नः अगर कोई औरत तमत्तुअ हज का उमरा कर रही थी मगर उमरा पूरा होने से पहले वह हैज़ (माहवारी) में मुबतला हो गई और 8 जिलहिज्ज तक पाक न हो सकी अब वह क्या करे?

उत्तरः इसी नापाकी की हालत में उमरे का एहराम खत्म कर दे और हज का एहराम बांधे मगर एहराम बांधने से पहले सर में कंघी कर ले और हज के तमाम अरकान पूरे करे सिवाय तवाफ के जब पाक हो जाये तो तवाफे जियारत करे फिर हरम से बाहर जा कर उमरे का एहराम बांधे और छूटा हुआ उमरा अदा करे और दम दे यह दम कफ्फारे का दम है इसलिए यह पूरा का पूरा फुकरा में तक्सीम होगा इस में से खुद नहीं खा सकते। (गुनीयतुल मनासिक जदीदः 205)

प्रश्नः एक हाजी हज के दौरान एहराम बांधते वक़्त और कुर्बानी वगैरा करते वक़्त तस्वीरें खिंचवाता है क्या इस से उस के हज के सवाब में कमी होगी?

उत्तरः हज्जे मबरूर की बड़ी फजीलत आई है और हज्जे मबरूर वह है जिसमें कोई गुनाह न हो, बे ज़रूरत तस्वीर खिंचवाना गुनाह का काम है। हाजी अगर हज के अरकान अदा करते हुए तस्वीरें

खिंचवायेगा तो गुनाह होगा और इस अमल से हज के सवाब में कमी जरूर होगी।

(किताबुल फतावा:8/492)

प्रश्न: हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बाज हरमों (दासियों) का भी जिक्र आता है जैसे मारिया किबतिया और रैहाना आदि क्या इन का शुमार भी उम्महातुल मोमिनीन (मुसलमानों की माओं) में होगा?

उत्तर: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अजवाज (पत्नियां) उम्महातुल मोमिनीन (मुसलमानों की माएं) हैं, इस मअ़ने (अर्थ) ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद किसी उम्मती से उनका निकाह दुरुस्त नहीं (अपने मां की तरह) अदब व एहतिराम में, लेकिन पर्दा और वरासत (उत्तराधिकार) माँ की तरह नहीं है। इसी तरह उम्मती उन के बेटे हो कर आपस में भाई बहन न होंगे (भाई बहन मां की वही बेटे बेटियां होंगे जो उन से पैदा हुए हों) और उम्मती भाई बहन आपस में महरम न होंगे। लेकिन जिन बाज खवातीन को आप ने तलाक़ दी थी उन से आप के बाद किसी उम्मती के साथ निकाह हो सकने या न हो सकने में इख्तिलाफ है, वह अजवाज जिन को आप ने तलाक नहीं दी उन से किसी उम्मती के साथ निकाह हराम होने में इत्तिफाक है। (इख्तिलाफ नहीं है) इस की दलील कुर्आने मजीद की सू–रए–अ़हज़ाब की आयत 53 है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार हरमों का जिक्र आता है–

(1) रैहाना बिन्त जैद नुज़ैरिया या कुरज़ीया।

(2) मारिया किबतिया

(3) जमीला।

(4) एक और बांदी जिन का नाम नहीं है उन को हज़रत जैनब बिन्त जहश ने हदीया किया था, इन चारों बुजुर्ग खवातीन के बारे में तफ्सीर की किताबों और सीरत की किताबों से मालूम होता है कि उन से भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उम्महातुल मोमिनीन की तरह किसी उम्मती से निकाह हराम था इस लिए इन हरमों का शुमार भी उम्महातुल मोमिनीन में होगा।

❖❖❖

अश्लीलता का युग .....

इसी तरह उन औरतों पर भी लानत फरमाई है जो मर्दों के जैसे कपड़े पहनती हैं और मर्दों जैसी चाल ढाल इख़्तियार करती हैं।

(बुखारी, सुनन अबू दाऊद)

6. समाज में पाक दामिनी की सुरक्षा के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह भी आदेश है कि कोई मर्द किसी औरत से एकान्त में न मिले जब तक कि कोई महरम साथ में न हो। (सही बुखारी)

इन आदेशों व उसूलों की पाबन्दी वास्तव में इस्लाम पर यक़ीन, दीन पर जमने (इस्तिक़ामत) और कुफ़्र से बेज़ारी और नफ़रत का ऐलान है। और यह चीज़ अल्लाह तआला को बहुत ज़ियादा पसंद है। यह अदा उस मालिक की नज़र में बड़ा दर्जा रखती है। हज़ार नफ़िल इबादतों से ज़ियादा शरीयत पर जमे रहना और विपरीत हालत में दीन के अहकाम (आदेश) की पाबन्दी करना अल्लाह को बहुत राज़ी करने वाला है।

❖❖❖

मुसलमानों का वास्तविक विधान कुर्आन है

—अल्लामा डॉ0 मुहम्मद इक़बाल

अख़बार ''ज़मींदार'' प्रकाशन 23 जून 1923 ई0 में शमसुद्दीन हसन का एक लेख प्रोफेसर गुलाम हुसैन से संबंधित पब्लिश हुआ, जिस में सम्वाद के मौलिक सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए लेखक ने डॉ0 इक़बाल की कुछ कविताओं को तर्क बनाया था जिन में पूंजी तथा श्रम संबन्धित विचार प्रकट किये गये।

अल्लामा इक़बाल ने इस अवसर पर ''ज़मींदार'' अख़बार 24 जून को एक पत्र भेजा था जो निम्नलिखित है।

जनाब एडीटर साहब ज़मींदार

अस्सलाम अलैकुम, मैं ने अभी अभी एक दोस्त से सुना है कि किसी साहब ने आपके अख़बार में या किसी और अख़बार में (मैं ने अख़बार अभी तक नहीं देखा) मेरी ओर बालशैविक विचार संबंधित किये हैं चूंकि बालशैविक विचार रखना मेरे नज़दीक इस्लाम के दाइरे से ख़ारिज हो जाने के मुतारादिफ (पर्याय) है, इसलिए इस लेख का खण्डन करना मेरा कर्तव्य है।

मैं मुसलमान हूं मेरा अक़ीदा है और यह अकीदा प्रमाण और तर्क पर आधारित है, मानव समूह की आर्थिक बीमारियों का उत्तम इलाज कुर्आन ने निश्चित किया है इसमें सन्देह नहीं की पूंजीवाद की ताक़त यदि सीमित सीमा से आगे बढ़ जाये तो वह दुन्या के लिए एक तरह की लानत है, लेकिन दुन्या को उसके हानिकारक प्रभाव से नजात दिलाने का तरीक़ा यह नहीं कि आर्थिक व्यवस्था से उस कूवत को ख़ारिज कर दिया जाये जैसा कि बालशैविक तजवीज़ करते हैं, कुर्आन करीम ने इस ताक़त को उचित सीमा के अन्दर रखने के लिए क़ानूने विरासत, सद्क़ा, हराम होना ज़कात आदि अनिवार्य किया है, और इन्सानी प्रकृति का लिहाज़ करते हुए यही तरीका व्यवहारतः योग्य है। रूसी Bolshevism यूरोप की अपरिणाम दर्शी और स्वार्थ परता पूजीवाद के विरुद्ध शक्तिशाली प्रतिक्रिया है, वास्तविकता यह है कि यूरोप का पूंजीवाद और रूसी बालशिविज्म दोनों कमी व ज़ियादती का नतीजा हैं, बीच की राह वही है जो कुर्आन ने हम को बताई है जिसका मैने ऊपर इशारतन (संकेत) किया है। शरीयते हक़्का इस्लामिया का मक़सद है कि पूंजीवाद की वजह से एक समूह दूसरे समूह को पराजित न कर सके, और इस उद्देश्य को पाने के लिए मेरे अक़ीदे के अनुकूल वही रासता आसान और अमल के लाएक़ है जिसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और बताया है इस्लाम पूंजी की ताक़त को आर्थिक व्यवस्था से ख़ारिज नहीं करता बल्कि इन्सानी प्रकृति पर एक गहरी नज़र डालते हुए उसे क़ाएम रखता है और हमारे लिए एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था नियुक्त करता है जिस पर अमल पैरा होने से यह कूवत कभी अपनी उचित सीमा से आगे नहीं बढ़ सकती। मुझे अफ़सोस है कि मुसलमानों ने इस्लाम के आर्थिक दृष्टिकोण

शेष पृष्ठ .....35...पर..

इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

इस्लाम एक विश्वव्यापी प्राकृतिक और स्थाई धर्म (मजहब) है उस का हर आदेश बड़ा महत्वपूर्ण तथा अपनी जगह एक निराली प्रतिष्ठा रखता है, उस के हर आदेश में हजारों नीतियां छुपी होती हैं, इस्लाम ने भौतिक तथा आध्यात्मिक से सम्बन्धित सम्पूर्ण आदेश दिये हैं और उन दोनों की नैतिकता की ओर संकेत किये हैं, माल एक भौतिक वस्तु है अगर उस को किसी नियंत्रण के बिना अपनी दशा पर छोड़ा जाय तो वह बढ़ना चाहेगा। भौतिकता की पथ भ्रष्टता तथा उसके विकार को नष्ट करने, समाज को विकारों से सुरक्षित रखने, परिवार को सुदृढ़ बनाने, धनवान तथा निर्धन के बीच प्रेम बाकी रखने तथा दोनों के बीच की दूरी दूर करने में माल की बड़ी भूमिका रहती है अतः पवित्र कुर्आन तथा पवित्र हदीस में माल को विभिन्न प्रकारों से वर्णित किया गया है, हम उस से सम्बन्धित कुछ बातें संक्षेप में लिखते हैं।

1. पवित्र कुर्आन में माल को जीवन की पूंजी कहा गया है, अनुवादः *"और अपने माल, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन–यापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उस में से खिलाते और पहनाते रहो और उन से भली बात कहो"।*

(अन्निसाः 5)

माल के बिना कोई काम पूरा नहीं हो पाता चाहे वह काम व्यक्तिगत का हो चाहे समूह का, जब उसे जीवन पूंजी अथवा जीवन सामग्री कहा गया है तो आवश्यक बात यह है कि माल ऐसे नासमझों के हाथ में न दे दिया जाय जो उस के शुद्ध प्रयोग से अवगत नहीं हैं।

2. पवित्र कुर्आन में माल को अल्लाह तआ़ला की देन बताया गया है अनुवादः *"और दो उन को अल्लाह के माल से जो उस ने तुम को दिया है"। (अन्नूरः33)*

अल्लाह के इस कथन से सिद्ध हुआ कि संसार की हर वस्तु अल्लाह ही की है यद्यपि अल्लाह ने मनुष्य को माल तथा दूसरी वस्तुएं दे कर किसी सीमा तक उस को उन का मालिक बना दिया है कि कोई दूसरा उस के माल को अथवा उस की वस्तुओं को उस की अनुमति के बिना न ले सकता है न प्रयोग कर सकता है परन्तु यह अधिकार स्वयं उस माल वाले को भी नहीं कि वह जिस प्रकार चाहे खर्च करे और जिस प्रकार चाहे उस से कमाई करे, अतः माल वाले के लिए माल के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।

3. माल स्वयं कोई खराब वस्तु नहीं है अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में कहीं "खैर" (भलाई) कहा है तो कहीं "फज्ल" (बड़ाई) कहा है अनुवादः *यह माल अल्लाह का फज्ल है जिसे चाहता है उस को देता है"।*

(अल हदीदः 21)

"वह तो "खैर" (माल) की सख़्त महब्बत करने वाला है"।

(अल आदियातः 8)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि ग़रीब मुहाजिरीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और कहा "धनवान बड़े–बड़े दर्जे और बाकी रहने वाली नेमत ले गये, अर्थात प्राप्त कर लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "यह क्या?" मुहाजिरीन ने कहाः जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं वह भी पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़े रखते हैं वह भी रखते हैं लेकिन वह सद्का करते हैं अर्थात अल्लाह की राह में माल खर्च करते हैं हम नहीं खर्च कर सकते, वह गुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं कर सकते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊँ कि तुम आगे बढ़ जाने वालों को पा लो और पीछे रह जाने वालों से आगे बढ़ जाओ और बिन तुम्हारे जैसा अमल किये कोई तुम से आगे नहीं बढ़ सकता मुहाजिरीन ने कहा अवश्य बताइये, आप ने फरमाया "हर नमाज़ के बाद 33,33 बार सुब्हानल्लाही, अल्हम्दुलिल्लाही अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया करो"। यह सुन कर वह चले गये और कुछ दिनों के बाद फिर हाजिर हो कर निवेदन किया कि मालदार भाई भी वही करने लगे जो हम करते हैं, अर्थात उक्त तस्बीहात पढ़ने लगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "यह अल्लाह का फज्ल है जिस पर चाहता है करता है"। (बुखारी मुस्लिम)

4. जब इस्लाम ने माल को जीवन की सामग्री बताया है तो चाहिए कि माल को सावधानी से खर्च किया जाये तथा उस को अपव्यय से बचाया जाये, पवित्र कुर्आन में अस्पष्ट रूप से बताया गया है, अनुवादः *"निःसन्देह अपव्यय करने वाले शैतान के भाई हैं"।*

(बनी इसराईलः 27)

अल्लाह के भले बन्दों के बारे में पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः *"और वह जब खर्च करते हैं तो न बेजा उड़ाते हैं और न कंजूसी करते हैं बल्कि उन के बीच मध्य मार्ग पर रहते हैं"। (अल फुरकानः 67)*

दूसरी जगह आया है, अनुवादः *"और न हाथ बिल्कुल ही खोल दो कि सब ही कुछ दे डालो और निन्दित और असहाय हो कर बैठ जाओ"।*

(बनी इसराईलः 29)

5. मनुष्य के स्वभाव को देखते हुए माल को उस की कमाई बताया गया है पवित्र कुर्आन में है, अनुवादः *"ऐ ईमान वालो! अपनी कमाई की पाक और अच्छी चीजों में से (अल्लाह की राह में) खर्च करो और उन चीजों में से भी जो हम ने धरती से तुम्हारे लिए निकाली हैं"। (अल बकराः 267)*

इस प्रकार माल जब भली वस्तु है तो उस का प्रयोग भी भलाई में होना चाहिए, परन्तु खैर की राहें (भलाई के मार्ग) कुर्आन और हदीस के अनुकूल हों इस लिए कि खैर (भलाई) का जानने और बताने वाला केवल अल्लाह ही हो सकता है अल्लाह ने पवित्र कुर्आन तथा अपने रसूल द्वारा हदीस में "खैर" को स्पष्ट किया है।" (1) अपव्यय न हो (2) दिखावे और ख्यात के लिए न हो, दूसरी बात यह कि उस की प्राप्ति ग़लत राहों से न हो। (3) ब्याज तथा घूस का न हो। (4) जुआ और लाट्री का न हो। (5) किसी का हक़ मार कर अत्याचार से प्राप्त न किया गया हो तथा दूसरे अवैध मार्गों से न कमाया गया हो, इन नियमों से मानव में परस्पर प्रेम पैदा

होता है इन नियमों को अपनाने वाला उच्च आचरण वाला बन कर पूरे परिवार और समाज के लिए अपितु मानवता के लिए करूणामय व्यक्ति बन जाता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जो अपने माल की सुरक्षा में मारा गया वह शहीद है, और फरमाया ऐ अल्लाह मैं निर्धनता तथा दीनता से तेरी श्रण चाहता हूं"। लेकिन अगर मनुष्य माल के हुकूक (अधिकारों) से अपरिचत रहता है तो वैध तथा अवैध की चिन्ता किये बिना माल तथा धन को बटोरने में लगा रहता है जब कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया अनुवादः *"तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो केवल एक आज़माइश हैं"। (अत्तग़ाबुनः 15)*

और हदीस शरीफ में आता है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "हर उम्मत के लिए एक फितना (आज़माइश) है और मेरी उम्मत का फितना माल है"।

हज़रत अबू जर रज़ि0 से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा की छांव में बैठे हुए थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे देख कर फरमाया "काबे के रब की कसम वह लोग बड़े घाटे में हैं" हज़रत अबू जर रज़ि0 फरमाते हैं, मैं आ कर बैठ गया मगर थोड़ी देर में उठ खड़ा हुआ और पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, आखिर वह कौन हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "वह ज़ियादा माल वाले हैं, सिवाये उन माल वालों के जो अपने माल से अपने आगे पीछे दाएं बाएं (भले कामों में) खर्च करें, मगर ऐसा करने वाले बहुत कम हैं" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "कोई भी ऊँटों, गायों और बकरियों वाला जो उन की ज़कात अदा न करे वह कियामत में इस तरह होगा कि उस के सारे जानवर बड़े मोटे ताजे होंगे वह उस को अपने खुरों से रौंदेंगे और सींगों से मारेंगे और यह सिलसिला बराबर जारी रहेगा। (तिर्मिजी)

एक दूसरी रिवायत में है कि जो लोग अल्लाह तआ़ला के माल का अवैध प्रयोग करते हैं उन का ठिकाना जहन्नम है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि "मुझे तुम्हारे ऊपर दीनता का भय नहीं है, अपितु भय इस बात का है कि दुन्या तुम पर खोल दी जाये अर्थात दुन्या का अधिक धन आदि तुम को प्राप्त हो जाये जैसा की तुम से पहले लोगों को दुन्या खूब दी गई, तो जिस तरह वह लोग दुन्या का धन प्राप्त करने में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने में ग्रस्त हुए, तुम भी दुन्या में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश में लग जाओगे, तो जिस तरह उन की उस कोशिश ने उन लोगों का विनाश किया, उसी तरह तुम को भी हलाक व बरबाद कर देगी"।

इसीलिए माल में भलाई बाकी रखने के लिए शरीअत ने अपने ऊपर और घर वालों पर खर्च करने, पड़ोसियों का ख्याल रखने, उपहार देने महमानों को खिलाने पिलाने का प्रलोभन दिया

और ज़कात का एक व्यवस्थित नियम प्रदान किया।

मनुष्य का संबंध इस भौतिक संसार से बहुत गहरा है एक ओर मनुष्य में अध्यात्मिक शक्ति विद्यमान हैं, तो दूसरी ओर भौतिकता का आकर्षण भी है, जब भौतिकता की शक्ति बढ़ती है तो मनुष्य का संतुलन बिगड़ जाता है, स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है, फिर मनुष्य में लोभ, ईर्ष्या जैसे विनाशकारी रोग जन्म लेते हैं उन्हीं विनाशकारी रोगों को समाप्त करने के लिए शरीअत ने सद्का और जक़ात की व्यवस्था की है, वास्तव में माल की जकात देने से माल में बरकत (अधिकता) होती है, इस के विपरीत ब्याज से बरकत उठ जाती है, अल्लाह तआ़लां फरमाता है, अनुवादः *"अल्लाह तआ़ला ब्याज को घटाता और मिटाता है अर्थात ब्याज से माल की बरकत जाती रहती है और सद्का माल को बढ़ाता है, अर्थात सद्क़ा देने से माल में बरकत होती है"। (अल बकराः 276)*

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जब भी कोई अपने पवित्र माल से सद्का करता है, (अल्लाह तआला पाकीजा माल को क़बूल करता है) तो वह उस को अपने दाहने हाथ से क़बूल करता है, वह रहमान के हाथ में ऐसा बढ़ता है कि पहाड़ से बढ़ कर हो जाता है चाहे वह सद्का खजूर का टुकड़ा ही क्यों न हो"।

जक़ात निकालने वालों में लालच तथा लोभ के रोग कम पाये जाते हैं अवैध माल को पा लेने की इच्छा नहीं होती है, अनुवादः *'और जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिया जाए ऐसे ही लोग सफल हैं"। (अल हश्र :1)*

इसके विपरीत ब्याज खाने वाले और घूस खाने वाले में अत्याधिक लोभ होता है, माल को सैंत सैंत कर रखने और उस को बराबर बढ़ाते रहने की इच्छा बराबर रहती है, ऐसा मनुष्य अपने लाभ के लिए दूसरों को आग में झोंकता है। जो लोग वास्तव में सहायता के अधिकारी होते हैं, उन्हीं के माल को हड़प कर लिया जाता है, उन के खून से अपनी प्यास बुझाई जाती है। जो माल वैध विधियों से प्राप्त किया जाये वह माल अल्लाह का प्रदान किया हुआ उपहार है परन्तु जिस माल से अल्लाह के आदेशानुसार गरीबों का भाग न निकाला जाये अर्थात ज़कात न दी जाये वह माल क़ियामत के दिन आग में तपाया जायेगा और उस से माल वाले की पेशानी, बग़ल और पीठ दाग़ी जायेगी।

देखिए सू–रए–तौबा आयत नं0 35) ज़कात द्वारा अर्थात ग़रीबों का हक़ दे कर माल को शुद्ध करने तथा हानिरहित बनाने का यह तरीक़ा केवल इस्लाम का बताया हुआ है और मुसलमानों में प्रचलित है और मुस्लिम धनवान हर वर्ष अपने माल का ढ़ाई प्रतिशत अपने गरीब भाइयों को देते हैं। इस नियम से पूंजीवाद समाप्त हो जाता है।

इन पूंजीपतियों ने गरीबों की लाशों पर अपने ऊँचे ऊँचे भवनों का निर्माण किया और उनका खून चूस चूस कर अपने बैंकों की तिजोरियां भरीं, आज भी उन निर्धनों के बल पर (जिन को न कब्र की जगह प्राप्त है न कफ़न का कपड़ा) भोग विलास कर रहे हैं, इस पथ भ्रष्टा और उस के भय से पवित्र कुर्आन ने पहले ही सूचित कर दिया था "ताकि वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही के बीच चक्कर न लगाता रहे"। (अल हश्र : 7)

शेष पृष्ठ .....39...पर..

कर्तव्यनिष्ठा

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

महान सम्राट हज़रत उमर रज़ि0 ने एक व्यक्ति को बुला भेजा, जिनका नाम हबीब था। वह आये तो पूछा कि क्या तुम सईद बिन आमिर रज़ि0 को जानते हो? जवाब मिला, जी हाँ! अच्छी तरह से जानता हूँ। पूछा, क्या उनके घर मेहमान बन कर रह सकते हो? जवाब मिला जी हाँ! इसमें कौन सी बात है।

हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि ये एक हजार दिरहम की थैली लो और सईद बिन आमिर रज़ि0 के घर मेहमान बन कर जा रहो, और देखो कि उनकी आर्थिक स्थिति किस प्रकार की है? यदि उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो तो ये दिरहम मेरी तरफ से दे देना।

हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि0 हिम्स के गवर्नर थे। हज़रत उमर रज़ि0 ने एक बार हिम्स का दौरा किया। वहां के गवर्नर और जनता से भेंट की। वापसी से पूर्व लोगों को बुलाया और कहा कि अपने राज्य के ऐसे लोगों के नाम तैयार कराओ जो बैतुलमाल (सरकारी खजाने) से सहायता के पात्र हैं।

सूची तैयार होने लगी तो पहला नाम लिखवाया गया सईद बिन आमिर! हज़रत उमर रज़ि0 ने पूछा, उन का नाम क्यों? उन्हें तो वेतन मिलता है। लोगों ने कहा, सरकार! वह अपने पास वेतन रखते ही नहीं, कुछ दिरहम निकाल कर शेष अल्लाह के रास्ते में बाँट देते हैं।

यही स्थिति जान कर हज़रत उमर रज़ि0 ने हजरत हबीब को एक हजार दिरहम की थैली थमाई।

हबीब जब उनके अतिथि बन कर पहुंचे और भोजन के समय दस्तरख्वान देखा तो उस पर सूखी रोटी और जैतून के तेल के अतिरिक्त कुछ न था। स्थिति देख कर हबीब ने थैली पेश की। थैली देख कर अनायास हज़रत सईद रज़ि0 के मुंह से "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" निकल पड़ा। उनकी पत्नी ये शब्द सुन कर बोल पड़ीं, ,खुदाया ख़ैर! क्या माजरा है? हज़रत सईद रज़ि0 ने कहा, एक दुर्घटना हो गई है।

पत्नी ने पूछा, क्या खतरनाक हादसा? सईद रज़ि0 ने उत्तर दिया, हाँ! कयामत टूट पड़ी है। पत्नी ने व्याकुल हो कर कहा, साफ—साफ तो बताइये।

सईद रज़ि0 ने उत्तर दिया कि घर में धन आया है, सम्राट हजरत उमर रज़ि0 ने एक हजार दिरहम की थैली भिजवाई है। पत्नी ने कहा, हाँ! प्रलय जैसी स्थिति तोहै लेकिन घबराने की कोई बात नहीं, एक कोने में डाल दीजिए। सवेरे मुजाहिदों का जो दस्ता इधर से गुजरेगा उसे सौंप देंगे।

आमतौर पर बड़े–बड़े ओहदेदारों की बीवियां लालची होती हैं, लेकिन जिसके वजूद में इस्लाम रच–बस जाए उसके सामने बड़ी–बड़ी लाल–पीली नोटें रद्दी कागज़ से ज़ियादा अहमियत नहीं रखतीं।

सुबह हुई तो हज़रत सईद रज़ि0 और उनकी पत्नी ने अपने घर में एक ढेला भी न रखा और समस्त दिरहम मोहताजों और गरीबों में बँटवा दिया।

आज मैं अपने देश को देखता हूं तो बड़ा दुख होता है। अभी कुछ दिनों पहले एक पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष आय से अधिक सम्पत्ति के मामले में आरोपित किये गए। पड़ताल करने पर उसके पास 6 अरब सम्पत्ति पाई गई, हालांकि छः साल पहले वह केवल 1 करोड़ के ही मालिक थे। ये सब चीजें नैतिकता से जुड़ी हैं, जब तक लोग धर्म से नहीं जुड़ेंगे और अपने पालनहार के प्रति जवाबदेही का विश्वास न रखेंगे तब तक ये लूट–मार का बाजार गर्म रहेगा।

❖❖❖

का अध्ययन नहीं किया, वरना उनको मालूम होता कि इस विशेष रूप से इस्लाम कितनी बड़ी नेमत है। मेरा अक़ीदा है *''फ़असबहतुम बिनेमतिही इख़वाना''* मेरा इसी नेमत की तरफ इशारा है क्योंकि किसी क़ौम के लोग उचित रूप से एक दूसरे के भाई नहीं हो सकते जब कि वह हर पहलू से एक दूसरे के साथ समानता न रखते हों और उस समानता का प्राप्त करना बिना ऐसे स्पेशल व्यवस्था के संभव नहीं जिसका उद्देश्य पूंजीवाद की शक्ति को उचित सीमा के अन्दर रखना है, यूरोप इस रहस्य को नज़र अन्दाज़ करके मुसीबत और परेशानी का शिकार है। मेरी दिली आरज़ू है कि मानव जाति की अपने अपने देश में ऐसे क़ानून तैयार करें जिन का उद्देश्य पूंजी की शक्ति को उचित सीमा के अन्दर रख कर उपरोक्त समानता की रचना हो, और मुझे यक़ीन है कि खुद रूसी क़ौम भी अपने वर्तमान व्यवस्था की त्रुटियां अनुभव से मालूम कर के किसी ऐसी व्यवस्था की ओर आने के लिए मजबूर हो जाएगी जिसके मौलिक सिद्धान्त शुद्ध इस्लामी होंगे या उनसे मिलते जुलते होंगे, वर्तमान काल में रूसियों को अर्थिक उद्देश्य चाहे कैसा ही प्रिय क्यों न हो, उनकी कार्य प्रणाली किसी मुसलमान को सहानुभूति नहीं हो सकती, हिन्दुस्तान और अन्य देश के मुसलमान जो यूरोप की पालिटिकल इकोनामी पढ़ कर पश्चिमी विचारों से तुरन्त प्रभावित हो जाते हैं उनके लिए आवश्यक है इस ज़माने में कुर्आन करीम की अर्थिक शिक्षा पर गहरी नज़र डालें, मुझे यक़ीन है कि वह अपनी तमाम मुशकिलात का समाधान इस किताब में पायेंगे, लाहौर की लेवर यूनियन के मुसलमान मेमबरान (सदस्य) ख़ास तौर पर इस ओर ध्यान दें, मुझको उनके अग़राज़ व मक़ासिद (उद्देश्य) के साथ दिली हमदर्दी है, मगर मुझे उम्मीद है कि वह कोई ऐसा तरीक़–ए–अमल (कार्यप्रणाली) न अपनायेंगे जो कुर्आनी तालीम (शिक्षा) के मनाफ़ी (विपरीत) हो।

❖❖❖

घरेलू दवाएं

—राशिदा नूरी

मुलेठी:

मुलेठी उन दवाओं में से है जो हर जगह मिलती है और जिसको हर शख़्स जानता है, ये एक बेलदार बूटी की जड़ होती है, तोड़ने पर अन्दर से पीली निकलती है, मज़ा मीठा होता है, "रुब्बुस्सूस" उसी का सत है, मुलेठी मिज़ाज में गर्म और ख़ुशक होती है।

मुलेठी बलग़म को निकालती और क़ब्ज़ को दूर करती है, इसलिए ये खांसी, दमा आवाज़ बैठ जाना और गले की खड़खड़ाहट वगैरह में लाभ देती है और हल्क़ और सीने की बीमारियों में लाभ देती है मुलेठी पेशाब की जलन को दूर करती है और पेशाब लाती है, प्यास को दूर करती है, हल्की खांसी मुलेठी को मुंह में रख कर चूसने से दूर हो जाती है।

मुलेठी 40 ग्राम पीपल 10 ग्राम को बारीक पीस कर 100 ग्राम शुद्ध शहद में मिला कर पाँच–पाँच ग्राम दिन में कम से कम तीन बार चाटने से नई और पुरानी खांसी दूर हो जाती है।

मुलेठी को खूब बारीक पीस कर सलाई से सुरमे की तरह आंखों में लगाने से आंखों की रौशनी बढ़ती है आज कल बाज़ार में मुलेठी का बारीक पाउडर मिलता है, मुलेठी का पाउडर आंखों की लाली को भी दूर कर देता है, इसके लिए भी सुरमे की तरह लगाना चाहिए।

मुलेठी 10 ग्राम को बारीक पीस छान कर कच्ची शकर 5 ग्राम मिलाएं फिर उसकी 3 पुड़ियां बनाएं, जिसको हिचकियां आ रही हों उसको 3–3 घण्टों के अन्तर से फँकाएं इनशा अल्लाह हिचकियां बन्द हो जायेंगी।

काली मिर्च:

काली मिर्च एक बेल दार बूटी का फल है, हिन्दोस्तान में आम तौर से लोग काली मिर्च ही को जानते हैं जब कि सफेद मिर्च भी होती है, मिर्च जब पक कर तैयार हो जाती है तो उसको हाथों से मल कर उसका छिल्का उतार कर सुखा लेते हैं, यही सफेद मिर्च है, छिल्का उतारे बग़ैर सुखाने पर काली मिर्च तैयार होती है।

मिर्च काली हो या सफेद दोनों का मिज़ाज गर्म और खुश्क है, काली मिर्च आम तौर से मसालों में प्रयोग होती है। काली मिर्च खाने को पचाती है, पेट और आँतों की रियाह (हवा) को तोड़ती और निकालती है, बलग़म को निकालती है, शरीर के पट्ठों को शक्ति देती है। पाचन क्रिया की कमज़ोरी और उफारा में काली मिर्च लाभदायक है। खाँसी और पट्ठों की कमज़ोरी में काली मिर्च प्रयोग की जाती है।

प्रयोग विधि:

अपच की दशा में काली मिर्च का पाउडर एक ग्राम पानी के साथ फांके, खांसी और पट्ठों की कमज़ोरी में उसका चूर्ण शहद में मिला कर पांच ग्रम दिन में तीन बार चाटें। स्मरण शक्ति को बढ़ाने के लिए सात काली मिर्चों का चूर्ण पांच ग्राम शहद में मिला कर नाशते से पहले चाटना लाभदायक है। इसको लगातार चाटना चाहिए।

❖❖❖

रूपवती का निक़ाब

एक सीख प्रद दुख भरी घटना

—फौज़िया सिद्दीक़ा बी0ए0

नोट:-मैंने यह घटना अपनी मृत्यु प्राप्त मरहूमा दादी से सुनी थी, उन्होंने इसको किसी पत्रिका में पढ़ा था, हो सकता है यह किसी साहित्य कार की कल्पित कहानी हो परन्तु चुंकि सीख प्रद है इसलिए अपनी बहनों के लिए लिख रही हूं। आज कल दुष्कर्म की घटनाएं चिन्ता का विषय बनी हुई हैं अतः मैं अपनी बहनों से विशेष कर सुन्दर रूप वाली बहनों से अनुरोध करती हूं कि वह अपनी सुरक्षा के दूसरे उपायों को अपनाने के साथ अपनी सुन्दरता को असंबन्धित तथा विकृत युवकों से छुपाने का भी प्रयास करें आवश्यकता पर बाहर निकलना हो तो सजधज कर ना निकलें और अपनी चाल ढाल तथा बोली वांणी से युवकों के लिए आकर्षण का कारण न बने। इस्लाम में तो बेपर्दगी महा पाप है। अल्लाह तआ़ला हम को और सभी हिन्दु—मुस्लिम बहनों को और देश की तमाम बहनों को सुरक्षा प्रदान करे। आमीन (फौज़िया)

रूपवती चन्द्र प्रकाश गायक की पत्नी थी, चन्द्र प्रकाश नेत्र हीन थे, उनकी आंखों की ज्योति बचपन में चेचक रोग में चली गई थी, चन्द्र प्रकाश गायकी के गुरु थे वह कालेज में गायन कला के टीचर थे, वह अपने हुनर में निपुण थे, उन का वेतन कालेज की उच्च श्रेणी का था, उनकी पत्नी रूपवती एक ज़मीदार की बेटी थी, वह मुस्लिम स्त्रियों जैसा निक़ाब पहनती थी।

गुरु चन्द्र प्रकाश कालेज में लड़कियों को भी गायकी सिखाते थे, कभी कभी कुछ लड़कियां गुरु चन्द्र प्रकाश की पत्नी से मिलने आतीं तो उनके चेहरे पर काला निक़ाब देख कर आश्चर्य में पड़ जातीं, रूपवती जब किसी जरूरत से बाहर निकलती तो मुस्लिम स्त्रियों की तरह सिर से पैर तक निक़ाब ओढ़ कर निकलती और घर में जब कोई मिलने आता तो चेहरे पर निक़ाब पहन लेती, वह आने वाली मेहमान लड़कियों की बड़ी आव भगत करती, आने वाली लड़कियां रूपवती को गुरु की पत्नी के नाते माता जी कहतीं।

एक दिन एक लड़की ने पूछ लिया

लड़की: माता जी मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूं।

रूपवती: पूछो पूछो हिचकिचाओ नहीं पूछो।

लड़की: माता जी हम लोगों ने आपको बाहर निकलते समय निक़ाब में देखा तो ख्याल किया कि शायद आप इस्लाम धर्म से प्रभावित हैं, लेकिन जब घर में चेहरे पर निक़ाब पहने देखा तो कुछ समझ में न आया कि इसका भेद क्या है, क्या आप हम लोगों को इस का भेद बताने का कष्ट करेंगी?

रूपवती: अवश्य बताऊँगी।

लड़की: हम लोगों का यह भी ख्याल है कि आप स्वस्थ्य शरीर रखती हैं आप की त्वचा बहुत सुन्दर है आप अपनी स्वच्छ तथा सुन्दर त्वचा को छुपाना चाहती हैं इसलिए हम लोगों के सामने भी अपना चेहरा छुपाती हैं, परन्तु लड़कियों से किसी सुन्दर स्त्री को अपना सुन्दर मुखड़ा छुपाने की क्या ज़रूरत?

रूपवती: मेरी प्रिय बेटियो तुम मेरे राज़ को बिना बताए न समझ पाओगी, मेरे इस मुखड़ा छुपाने में बड़ी दुखद कहानी है, यदि सुनना चाहो और उससे कुछ सीख लेना चाहो तो मैं सुनाऊँ।

कई लड़कियां एक साथ: अवश्य सुनेंगे अवश्य सुनाइये।

रूपवती: अच्छा तो सुनो, पहले मेरा चेहरा देखो यह कह कर रूपवती ने निक़ाब उठा दिया रूपवती का चेहरा देख कर लड़कियां हे भगवान कह कर चीख़ पड़ीं और रूपवती ने फिर चेहरा निक़ाब से ढ़क लिया और सुनाने लगी। मैं एक अच्छे ज़मींदार की इकलौती पुत्री हूं, ईश्वर ने मुझे ऐसा रूप दिया था कि दूर दूर तक मुझ जैसी रूपवान लड़की न थी, मेरे पिता के कई बाग़ थे एक बड़ी सुन्दर फुलवारी थी जिस में भांति भांति के सुन्दर फूलों के पेड़ थे, मैं बड़े लाड प्यार से पाली गई, बहुत ही अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध हुआ, 18 वर्ष की आयु में मैंने ग्रेज्वेशन कर लिया, अब मेरे पिता मेरी शादी करना चाहते थे, मैं प्रतिदिन सुब्ह शाम अपनी फुलवारी में टहलने जाती, मेरी फुलवारी मेरे महल से 500 मीटर की दूरी पर थी, मेरी सुन्दरता प्रसिद्ध थी, जब मैं टहलने निकलती तो रास्ते में बाज़ युवक मेरे दर्शन को खड़े मिलते, परन्तु मेरे पिता के भय से किसी में मुझे छेड़ने का साहस न था, मुझे भी अपने पिता पर गर्व था और मैं निडर थी, जो युवक मुझे देखने को खड़े मिलते उनमें एक थाने दार का बेटा चन्दा सिंह भी था, चन्दा सिंह थानेदार का बेटा होने के कारण बड़ा निडर था, एक दिन उसने मुझे सम्बोधित कर ही दिया उसने कहा देवी जी! मैं आपकी कृपा दृष्टि की प्रतीक्षा में हूं, मुझे उस की इस बात से क्रोध आ गया और मैंने उसे डांट कर कहा शट अप, नानसेन्स उस को मेरी डांट बुरी लगी, दूसरे दिन टहलने निकली तो रास्ते में जहां चन्दा सिंह खड़ा मिलता था उस स्थान पर एक हिष्ट पुष्ट काला सा युवक खड़ा था उस के हाथ में एक बोतल थी उसने झपट कर बोतल मेरे मुख पर उंडेल दी और भाग खड़ा हुआ, मैं चीख कर गिर पड़ी उसने मुझ पर तेज़ाब डाला था, लोग दौड़ पड़े मुझे उठा कर मेरे घर पहुंचाया, मेरे माता पिता को बड़ा दुख हुआ परन्तु मेरे पिता ने होश से काम लिया मुझे तुरन्त अस्पताल पहुंचाया, डाक्टरों ने निरीक्षण किया और मेरे पिता को सूचित किया कि ईश्वर की कृपा हुई मुंह का अन्दरूनी भाग और आंखें सुरक्षित हैं अलबत्ता चेहरा बहुत खराब हो चुका है चिकित्सा से घाव तो भर जाएगा, परन्तु घाव के गहरे निशान रहेंगे, डॉक्टर लोग मेरे इलाज में लग गये उधर वह तेज़ाब डालने वाला अत्याचारी पकड़ लिया गया वह चन्दा सिंह का आदमी था, चन्दा सिंह भी पकड़ा गया। दोनों जेल गये, मेरे पिता तो दोनों को गोली मार देना चाहते थे, परन्तु उनको तो पुलिस ने जेल पहुंचा दिया था।

मुझे स्वस्थ होने में कई महीने लगे मगर मेरा चेहरा वैसा हो गया जैसा तुम लोगों ने अभी देखा, अब बताओ यह चेहरा मैं न छुपाऊँ तो क्या करूं? यह वृत्तांत सुन कर बाज़ लडकियों के आंसू गिरने लगे, रूपवती ने आगे कहा! मेरी शादी शायद मेरे पिता जी किसी ज़मींदार के बेटे से करना चाह रहे थे परन्तु अब मेरे भाग्य में किसी ज़मींदार का स्वस्थ बेटा कहां था, अब तो मेरी शादी के लाले पड़ गये अब मुझे स्वीकार करने को कोई तैयार न था, अन्ततः किसी हितैषी बिचौलिये ने आप के गुरु जी से मेरा रिश्ता तै कराया और पिता जी ने आप लोगों के गुरु जी से मेरा विवाह कर दिया आपके गुरु जी का अच्छा वेतन है, आपके गुरु जी का अपनी कुशल कला से ऊँचा स्थान और अच्छा सम्मान है, मैं अपने माता पिता से जो चाहूं वह मिलता है बड़ा सुखी और सम्मानित जीवन है परन्तु

क्या इस हानि का कोई बदल भी है? मैं अपने ईश्वर को धन्यवाद देती हूं कि उसने उस क्रूर के आक्रमण से जीवित बचा लिया तो बाकी जीवन में दूसरे कष्टों से बचा कर सुखमय जीवन दिया, मैं सोचती हूं कि यदि मैं मुसलमान स्त्रियों का निक़ाब पहले ही से अपनाए होती तो मुझे यह दिन न देखने पड़ते।

मेरी प्रिय बेटियो मैं तुम को नसीहत करती हूं कि तुम अपनी सुन्दरता का निखार दिखाती न फिरना जब तुम बाहर निकलो तो सज धज के मत निकलो, ढीले ढाले सादे वस्त्र में निकलो, तुम्हारी सजावट तुम्हारी सुन्दरता का निखार केवल तुम्हारे पति के लिए होना चाहिए, यदि तुम समाज से दुष्कर्म दूर करना चाहती होतो तुम को ऐसा करना चाहिए, मैं तो कहूंगी कि तुम्हारी शिक्षा भी पृथक होनी चाहिए यद्यपि मैं स्वामी दया नन्द सरस्वती के समस्त विचारों से सहमत नहीं हूं परन्तु उनकी यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी कि लड़कियों की शिक्षा का स्कूल लड़कों के स्कूल से काफ़ी दूर होना चाहिए, यह बात उन्होंने "सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक में लिखी है।

मेरी बेटियो तुम गायन कला सीखती हो परन्तु मेरी सीमित बुद्धि कहती है कि तुम्हारा गाना समाज को आनन्दित करने के बजाय अपने पति को आनन्दित करने के लिए होना चाहिए।

मेरी नसीहत यह भी है कि तुम अपनी छोटी बहनों को भी समझाओ कि वह सदैव ढीले ढाले कपड़े पहनें वह कुछ व्यायाम भी किया करें परन्तु बनने संवरने की ओर ज़ियादा ध्यान न दें अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें बुराईयों से बचें लड़कों से दोस्ती करने के बजाए लड़कियों से दोस्ती रखें ईश्वर उन को मेरी जैसी बला से सुरक्षित रखे मेरी बेटियो क्या तुम मेरी इस दुखद कहानी से सबक़ लोगी?

सभी लड़कियों ने बारी बारी से कहा माता जी आप संतुष्ट रहें हम लोग आपके उपदेशों को अपनाने का पूरा प्रयास करेंगे। ◆◆

इस्लाम की आर्थिक.....

भौतिकता की इस बाढ़ में मनुष्य को जिस वस्तु की जितनी अधिक आवश्यकता थी, अल्लाह तआ़ला ने वह वस्तु उतनी ही अधिक प्रदान कर दी ताकि हर मनुष्य उस से लाभ उठा सके, जैसे रौशनी, पानी और हवा आदि।

इसके अतिरिक्त सोना, चांदी आदि में उत्तराधिकार के नियम तथा दूसरे अधिकार जक़ात आदि बयान कर के उन को स्थिरता से बचा लिया और पूंजीवाद व्यवस्था की हानि से इस्लामी समाज को बचा लिया, कम्यूनिज्म ने निर्धनों तथा दीनों की देख माल तथा उन से और सहानुभूति का खूब ढिंढोरा पीटा परन्तु संसार जानता है कि उस का क्या परिणाम निकला जिन देशों में कम्यूनिज्म व्यवस्था बल पूर्वक चलाई गई वहां का मनुष्य लुक्मे लुक़्मे (एक एक कौर) को तरस गया। परिणाम स्वरूप अल्लाह तआ़ला के विद्रोही, विकास प्रियता का दम भरने वाले साम्यवाद का झण्डा उठाने वाले स्वयं साम्यवाद के शव को अपने कन्धों पर उठाए हुए दो गज ज़मीन ढूंढने में व्याकुल हैं।

आज भी अगर कोई अर्थव्यवस्था तथा मानवकल्याण की व्यवस्था संसार को वास्तविक सम्पन्नता के मार्ग पर ले जा सकती है तो वह केवल इस्लामिक अर्थव्यवस्था है जिसमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञा पालन है विकास तथा सफलता है तथा प्राकृतिक मानवीय समानता है। ◆◆

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

हम सब भारत के बाशिन्दे हैं
ہم سب بھارت کے باشندے ہیں
भारत को हिन्दोस्तान भी कहते हैं
بھارت کو ہندوستان بھی کہتے ہیں
भारत प्यारा हमारा वतन है
بھارت پیارا ہمارا وطن ہے
हम भारती भी हैं और हिन्दी भी हैं
ہم بھارتی بھی ہیں اور ہندی بھی ہیں
भारत में जमहूरी हुकूमत है
بھارت میں جمہوری حکومت ہے
भारत की हुकूमत का कोई मजहब नहीं है
بھارت کی حکومت کا کوئی مذہب نہیں ہے
भारत की हुकूमत सेकूलर हुकूमत है
بھارت کی حکومت سیکولر حکومت ہے
भारत का दस्तूर दुन्या में मशहूर है
بھارت کا دستور دنیا میں مشہور ہے
भारत के दस्तूर में हर मजहब को आज़ादी दी गई है
بھارت کے دستور میں ہر مذہب کو آزادی دی گئی ہے
भारत में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब मिल कर रहते हैं
بھارت میں ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی سب مل کر رہتے ہیں
हम अपने वतन भारत से महब्बत करते हैं
ہم اپنے وطن بھارت سے محبت کرتے ہیں
अपने वतन भारत की हिफाजत हमारा फ़र्ज़ है
اپنے وطن بھارت کی حفاظت ہمارا فرض ہے